तुम कहते तो सही

मेघा विक्की सोंकला

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Megha Vicky Sonkla 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69956-06-2

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: August 2026

कभी मुझसे मिलना हो तो

नैनीताल की नैना झील से सटे

मॉल रोड पे मिलना।

पहली बार जब हम मिले

2007 की सुबह मुस्कान झट से उठी और फटाफट तैयार होने लगी।

आज उसके नए ऑफिस का पहला दिन है।

वैसे तो पिछले 5 साल से नौकरी कर रही है, पर अभी फिलहाल उसने ऑफिस चेंज किया है, क्योंकि उसके पुराने ऑफिस की हालत ठीक नहीं थी।

मुस्कान जैसे ही तैयार होकर बाहर आई, उसकी मम्मी ने चाय और पोहा टेबल पर रखा और उसे बोला…

जल्दी जल्दी खा लो वरना पहले दिन लेट हो जाओगी।

(इतने में अंदर कमरे से मुस्कान के पापा की आवाज आई), ये नहीं होगी लेट, आज तक कभी लेट हुई है? मेरी बेटी है, बिल्कुल पंक्चुअल।

इतने में मुस्कान की मम्मी ने हल्का सा मुंह टेढ़ा करके एक हल्की सी स्माइल दी और किचन में वापस चली गई।

मुस्कान ने अपना ब्रेकफास्ट खत्म किया, मंदिर के आगे हाथ जोड़े और मम्मी पापा को बाय बोलकर वो जल्दी जल्दी सीढ़ियों से उतरने लगी…

इतने में पापा ने उसे कुछ खुले पैसे दिए और बोला… एंजॉय, हैव अ नाइस डे *(मज़े करें, आपका दिन अच्छा रहे।)*

मुस्कान ने स्टैंड पे जाकर बस ली और ऑफिस के लिए निकल गई।

उसका नया वाला ऑफिस उसके घर से कुछ 30 किमी दूर था।

पर मुस्कान को आदत थी दूर जाने की। उसका स्कूल, कॉलेज और पहला वाला ऑफिस भी दूर ही था।

मुस्कान कंडक्टर से बाराखंबा की टिकट लेकर विंडो वाली सीट पर बैठ गई।

ये नवंबर का महीना था। मुस्कान ने हल्का सा पतला ब्राउन रंग का स्वेटर पहना था और दिल्ली की सर्दी की हवा उसके मुंह को प्यार से छू रही थी।

मुस्कान ने अपने बैग से पानी की बोतल निकाली और पानी पिया।

अपने दिमाग में, कुछ नए ऑफिस की, कुछ पुराने ऑफिस की और कुछ अपने घर की बातें सोचते-सोचते मुस्कान अपने नए ऑफिस पहुंच गई।

नए ऑफिस का पहला दिन ऐसा होता है, जैसे हम किसी नई जिंदगी में कदम रख रहे हों। सब कुछ नया, लोग नए, काम नया, माहौल नया, तौर तरीका नया… सब कुछ बस नया….|

मुस्कान ने दरवाजा खोला। सामने रिसेप्शन पर बैठी लड़की को स्माइल करते हुए गुड मॉर्निंग विश किया।

गुड मॉर्निंग….. क्या नाम है आपका?

रेखा….. और आपका?

मुस्कान…

गुड मॉर्निंग मुस्कान…. कॉनग्रेचुलेशन फॉर दिस जॉब… |आइए, अभी आपको कॉन्फ्रेंस रूम में बैठना है, मैं एचआर को बता देती हूं, फिर वो आपको आपकी सीट पर ले जाएंगी।

थैंक यू रेखा जी ….. (मुस्कान ने कॉन्फ्रेंस रूम की टेबल पर अपना बैग रखते हुए कहा, चेयर खींची और वो वहां बैठ गई)

(इतने में एक आवाज आई…) मैम पानी, आप क्या लेंगी, चाय या कॉफी?

क्या नाम है भैया आपका?

भानु…

गुड मॉर्निंग भानु भैया, थैंक यू पानी के लिए, मैं चाय लूंगी, कॉफी नहीं पीती मैं।

भानु ने मुस्कुराते हुए बोला, गुड मॉर्निंग मैडम।

मुस्कान को सबका नाम जानना और ग्रीट करना बहुत पसंद था।

भानु ने थोड़ी देर में चाय लाकर रखी।

मुस्कान ने पीते ही मुंह बनाया, वो मशीन की चाय थी जो उसे बिल्कुल पसंद नहीं आई।

थोड़ी ही देर में एचआर ने रूम में एंट्री ली।

हाय मुस्कान, वेलकम टू द टीम, हाउ आर यू? *(हाय मुस्कान, टीम में आपका स्वागत है। आप कैसी हैं?)*

आई एम गुड शर्मिष्ठा, हाउ आर यू? *(मैं अच्छी हूँ शर्मिष्ठा, आप कैसी हैं?)*

आई एम गुड टू *(मैं भी अच्छी हूँ।*)….. अच्छा, आपको मैं सीट पर थोड़ी देर में ले जाऊंगी। जब तक आप अपने पेपर्स दे दो और ये फॉर्म फिल कर दो… होने के बाद रिसेप्शन पर बता देना….. मैं आ जाऊंगी।

मुस्कान ने फॉर्म फिल करना शुरू ही किया था, इतने में किसी ने जोर से दरवाजा खोला, दरवाजा खोलते वक्त वो रेखा से बात कर रहा था।

गुड मॉर्निंग रेखा जी… आज तो बहुत सुंदर लग रही हो, क्या लगाया है स्पेशल?

अरे कुछ नहीं रवि… तुम भी ना… बस तंग करने के लिए कुछ भी बोलते हो। वैसे तुम भी अच्छे लग रहे हो।

रवि ने जैसे ही दरवाजे के अंदर देखा तो उसकी नजर मुस्कान पर पड़ी। उसने एकदम से दरवाजा बंद करते करते सॉरी सॉरी सॉरी बोला… वो मैं अपना बस आई-कार्ड लेने आया था।

मुस्कान ने स्माइल करते हुए बोला, कोई बात नहीं, गुड मॉर्निंग….

यूँ तो रवि बाहर जा रहा था, पर गुड मॉर्निंग सुनकर उसने भी गुड मॉर्निंग बोला।

न्यू जॉइनी? मुबारक हो….. तो फंसा लिया हमारी एचआर ने आपको भी।

मुस्कान ने एकदम जवाब दिया, क्या पता मैंने फंसाया हो एचआर को।

मुस्कान की बात सुनकर रवि के चेहरे पर बड़ी सी स्माइल आई और बोला, लगता है सही जमेगी हमारी।

मैं रवि हूं… मार्केटिंग डिपार्टमेंट में। आपने बताया नहीं अपना डिपार्टमेंट।

मार्केटिंग, मुस्कान ने स्टाइल से बोला, जैसे वो कह रही हो… बच्चू अब तो मिलना जुलना लगा रहेगा।

कभी कभी एक अचानक से खोला गया दरवाजा हमारी जिंदगी में कुछ नए रास्ते और रिश्ते भी ले आता है। शायद कुछ ऐसा ही मुस्कान और रवि का रिश्ता भी हो सकता है।

.

.

उस दिन मुस्कान ने अपने नए ऑफिस में पहला दिन बिताया, आधा दिन तो इंट्रो में और सीट तक पहुँचने में ही लग गया, फिर लंच के बाद आधा दिन उसने अपने HOD के साथ बैठकर अपने काम की ब्रीफिंग ली।

वैसे तो आप सभी जानते हैं कि पहला दिन बहुत हेवी और स्लो होता है, पर मुस्कान का पहला दिन यूँ बीता जैसे 1 घंटा।

मुस्कान क्योंकि बहुत फ्रेंडली थी, छुट्टी के वक्त तक उसकी 5-6 लोगों से अच्छी बातचीत हो गई, जिसमें से एक ने उसे साथ चलने के लिए भी कहा क्योंकि दोनों का घर एक ही दिशा में था।

मुस्कान उस कलीग के साथ बस मैं घर तक गई, और घर पहुँचकर पूरे दिन भर की बातें ऑल इंडिया रेडियो की तरह मम्मी-पापा को बताईं।

मुस्कान का एक भाई भी है, बहुत ही शांत और शालीन, बिल्कुल मुस्कान का उल्टा। मुस्कान जितनी चंचल और टॉकटिव है, उसका भाई उतना ही शांत है। कुछ दिनों से उसका भाई अपने मामा के घर है और नेक्स्ट वीक वापस आएगा।

सारी बातें बताने के बाद मुस्कान ने अपने पेरेंट्स के साथ डिनर किया, फिर थोड़ा सा टीवी देखा "तीन बहुरानियाँ", जो उसकी मम्मी के कारण उन सबको देखना पड़ता है। सीरियल खत्म होने के बाद सब अपने-अपने रूम में सो गए।

खाने पे चर्चा

अगले दिन मुस्कान अपने ऑफिस पहुँची। उसने अपनी सीट पर बैठकर अपनी टेबल अरेंज की, पहले दिन उसे इतना टाइम ही नहीं था। इतने में पीछे से आवाज आई

गुड मॉर्निंग मार्केटिंग वालों…!!

मुस्कान आवाज सुनते ही समझ गई ये रवि की आवाज है। उसने बिना उसे देखे ही बाकी लोगों के साथ सुर मिलाकर Good Morning Wish किया… और ये कहते ही उसने रवि को देखकर बोला

हाय मिस्टर लेट लतीफ, झाड़ू-पोछा, खाना सब करके आने में देर हो गई क्या?

अरे तुम्हें कैसे पता मैं ये सब करता हूँ?

बस मैंने शक्ल देखकर Guess किया।

अरे वाह, आप तो मुझे एक दिन में समझ गईं।

और क्या, मार्केटिंग वाले हैं… समझना और समझाना तो फितरत है।

क्या बात है मैडम… BTW, मैं सुबह 3 घर में झाड़ू-पोछा करके आता हूँ, यहाँ की Salary से गुजारा नहीं है, तो थोड़ा-बहुत Late होता रहता है…

और ये मैं सब इसलिए बता रहा हूँ, क्योंकि आपने HR को फँसा रखा है, तो उससे बात करके मेरी Late संभाल लेना।

हाहाहा… तुम्हें याद है कि मैंने HR को फँसाया है, मुझे लगा भूल गए होंगे।

नहीं मैडम, पहली बात और मुलाकात हमेशा याद रखनी चाहिए।

Ok Sir, आगे से हम ध्यान रखेंगे।

ये कहते ही दोनों अपनी-अपनी सीट पर बैठकर डेस्कटॉप पर काम करने लगे।

मुस्कान की सीट से रवि की सीट पूरी दिखती थी, लेकिन रवि की पीठ उसकी तरफ थी, और इसी वजह से रवि को मुस्कान की सीट बिल्कुल नहीं दिखती थी।

लंच अकेले करती हो आप या किसी का साथ भा गया?

कल तो मैंने रिया, सुमन और काव्या के साथ किया था।

अच्छा…

मतलब… क्या अच्छा?

अरे यही कि आप लड़कियों के साथ लंच करती हैं। वैसे भी लड़के भुक्कड़ होते हैं, आपका सारा लंच खा जाएंगे।

अरे ऐसा नहीं है… वैसे एक बात बताऊँ, मुझे लड़कियाँ बिल्कुल पसंद नहीं, मुझे सिर्फ और सिर्फ लड़के ही पसंद हैं… But You Know First Day, (लेकिन आप जानते हैं, पहला दिन) क्या करते।

तुम किसके साथ करते हो लंच?

हम तो दुनिया के साथ करते हैं, जो मिल जाए।

मतलब?

अरे नीचे जाता हूँ खाना खाने, तो जो भी साथ में खा रहा होता है वही Partner है।

तुम लंच घर से नहीं लाते?

नहीं।

ऐसा क्यों, कौन-कौन है तुम्हारे घर में?

घर में तो सब हैं Mom, Dad, Sister, Brother… But यहाँ मैं अकेले रहता हूँ, तो अभी Lunch वाली Didi नहीं है… सोच रहा हूँ जल्दी लगवा लूँ, तब तक थोड़ा ठेले वालों का Business बढ़ा रहा हूँ।

अच्छा, कहाँ के हो तुम?

मैं उत्तराखंड, नैनीताल… वैसे मैंने सोचा था आप कहोगी… कल से मैं आपका खाना ले आऊँगी, पर खैर आपने तो Question ही बदल दिया।

हाहाहा… मैं क्यों लाऊँ खाना? मेरा तो खुद Mummy बनाती है। कभी मन किया तो तुम मुझे खिला देना ठेले पर, पर मुझसे उम्मीद मत करना लाने की।

क्या बात है मैडम, सीधे-सीधे मना कर दिया।

हाँ, बात घुमा-फिराकर करना मुझे नहीं आता, इसलिए तो लड़कियाँ पसंद नहीं हैं मुझे।

समझ गया जी… चलो आप enjoy करो अपना महिला मित्र वाला lunch, मैं चला नीचे।

Excuse Me… मैं मित्र आसानी से नहीं बनाती, तो Colleagues ही ठीक हैं।

Ok मैडम, जैसे आप कहें।

व्हाइट शर्ट

ऐसे ही देखते-देखते पूरे 8 महीने बीत गए। नए ऑफिस में अब वो Adjust हो चुकी थी। सबसे मिलना-जुलना, काम करना सब सही था।

रवि और वो मिलकर काफी प्रोजेक्ट्स पर काम करते थे, और दोनों एक-दूसरे से नोक-झोंक और ताना-तरकश वाली बातें करते थे।

ऑफिस का टाइम 9 बजे का था और आज 9 July भी थी। घड़ी में समय करीब 12 बजे का था, पर अभी तक रवि आया नहीं था।

मुस्कान का ध्यान बार-बार उसकी Chair पर और घड़ी पर जा रहा था। कोई Project जिसे Submit करने की आज Last Date थी, उसमें मुस्कान को रवि की Help चाहिए थी।

एकदम से एक आवाज आई -

बाप रे, इतनी बारिश … दिल्ली भी अजीब शहर है।

मुस्कान ने एकदम से नजर ऊपर की और रवि की तरफ देखते हुए कहा—

भीगना तो था ही, Late जो आए हो? टाइम से आते तो भीगते नहीं, तब बारिश नहीं थी।

रवि थोड़ा झुका और मुस्कान के कान के पास आकर बोला—

Interview देने गया था, इसलिए Late हो गया।

मुस्कान Chair पर बैठी थी और रवि झुककर उसके कान में बोल रहा था, ताकि सबको सुनाई न दे।

रवि का सिर्फ ये कहना कि Interview देने गया था, ऐसा था जैसे लाखों बांसुरी मुस्कान के कान में कोई गीत बजा रही हों... उसकी भीगी हुई Shirt जैसे उसे भी गीला कर चुकी हो... और ये पहली- पहली बारिश, जैसे उसे पहले-पहले प्यार का एहसास करा रही हो।

मुस्कान ने नजर टिकाकर रवि को देखा। वैसे तो वो रोज उसे देखती थी और उसे वो बिल्कुल पसंद नहीं था।

मतलब उसे जैसे लड़के पसंद थे, वो वैसा नहीं था। वो Good Looking और गोरा था, But मुस्कान को सांवले लड़के पसंद थे।

Infact वो तो कई बार बोल भी देती थी; कैसी सी तुम्हारी शक्ल है, और आवाज तो बिल्कुल बेकार... जबकि उसकी आवाज काफी लोगों को पसंद थी।

खैर... आज जब मुस्कान ने उसे ध्यान से देखा, तो उसकी भीगी हुई White Shirt से नजर नहीं हट रही थी... मानो White Shirt और Grey Trouser में वो दुनिया का सबसे खूबसूरत लड़का हो।

मुस्कान अभी अपने ख्यालों में खोई हुई थी कि रवि ने अपने भीगे हुए जूते उतारकर मोज़े भी निकाल दिए, और उसके पैर इतने साफ और सुंदर लग रहे थे कि मुस्कान का सारा ध्यान उसके पैरों पर चला गया।

यहाँ क्यों उतारे जूते? अपनी सीट पर उतारो, मेरी सीट मत गीली करो।

मुझे पता था तुम यही बोलोगी, इसलिए उतारे। अच्छा, मैं पोंछा लगवा दूँगा। तुम बताओ, आज के प्रोजेक्ट का क्या सीन है?

बस सब हो गया, एक बार तुम आखिरी वाला पेज देख लो, फिर मैं सबमिट कर देती हूँ। आज आखिरी तारीख है।

हाँ, अभी देखता हूँ।

इसके बाद दोनों ने अपने प्रोजेक्ट को पूरा किया और सबमिट कर दिया।

शाम हुई, छुट्टी हुई, वे दोनों अपने-अपने घर चले गए, पर मानो मुस्कान का शरीर बस आज घर गया था, उसका मन अभी भी सफेद शर्ट की नमी महसूस कर रहा था।

इनाम

आज का दिन कुछ अलग था, मुस्कान बहुत खुश थी, मानो ऑफिस नहीं पिकनिक पर जा रही हो। उसके चेहरे पर सुकून और बेचैनी दोनों थी, अभी भी उसकी आँखें व्हाइट शर्ट के पानी से भीगी हुई थीं।

मुस्कान तैयार हुई और ऑफिस पहुँची, घड़ी में 9:10 हो चुके थे पर रवि का कोई अता-पता नहीं था।

मुस्कान बेचैन थी, एक सेकंड वो गेट को देखती और दूसरे सेकंड रवि की सीट को।

ये 10 मिनट मानो जैसे 10 साल हो गए।

वो बस दरवाजे को देख ही रही थी, इतने में रवि ने एंट्री ली…

मिस्टर लेट लतीफ, कभी तो टाइम से आया करो, क्या पता कुछ इनाम मिल जाए… ऐसा कहकर मुस्कान ने सबको जोर से हँसा दिया।

ये कभी टाइम पर नहीं आ सकता मुस्कान, हम इसे पिछले 1 साल से देख रहे हैं (पीछे बैठे एक कोलीग ने कहा)।

फिर सब अपने-अपने काम में लग गए।

मुस्कान का सारा ध्यान रवि पर था, वो उसे देखते रहना चाहती थी, फिर चाहे उसकी पीठ ही क्यों न दिख रही हो।

कभी-कभी किसी से बात करना या उसका चेहरा देखना जरूरी नहीं होता, बस उसके आसपास होने का एहसास ही बहुत होता है, लगता है मानो बस यही सुकून है और जिंदगी को बस यही चाहिए, उसका आसपास होना।

ऐसे ही उसको अपने आसपास महसूस करते हुए मुस्कान ने पूरा दिन निकाल दिया, आज रवि और दिनों से थोड़ा ज्यादा बिजी था, वो एक बार भी मुस्कान को तंग करने नहीं आया, उसने उसे इंटरकॉम भी नहीं किया।

मुस्कान थोड़ी बेचैन थी, कल ही तो व्हाइट शर्ट का असर हुआ था और आज वो उससे बात भी नहीं कर पा रही थी।

.

.

अगले दिन सुबह मुस्कान ऑफिस पहुँची, जैसे ही वो अपने ऑफिस पहुँची, उसमें एक स्टिकी नोट था जिस पर लिखा था—

"क्या है मेरा इनाम"

वो नोट देखते ही मुस्कान के चेहरे पर पूरी स्माइल आ गई, वो खिलखिला उठी।

उसने फुल जोश के साथ रवि की सीट की तरफ देखा, वो चेयर घुमा कर मुस्कान को ही देख रहा था और अपने दोनों हाथों से विक्ट्री का साइन बनाकर उसे चिढ़ा रहा था, मानो उसने कोई बहुत बड़ा पद्म भूषण अवॉर्ड जीत लिया हो।

उसको देखते ही मुस्कान के कदम और दिल दोनों नहीं रुके, वो एकदम रवि की सीट के पास पहुँची।

क्या बात है, आज तो रवि टाइम पर निकला, आज तुमने अपने नाम का सही मतलब साबित किया… हाहाहा।

यूँ बातों में मत उलझाओ, मेरा इनाम बताओ, क्या दे रही हो?

जैसे ही उसने इनाम माँगा, मुस्कान शांत हो गई, उसने कुछ सोचा नहीं था, बस ऐसे ही उसे बोल दिया था, कि क्या पता टाइम से आने पर इनाम मिले,

लेकिन अब रवि ने उससे इनाम माँग लिया, अब उसे देना था। वो कुछ बोलने ही वाली थी, इतने में बाकी सब भी आ गए और हैरानी से रवि को देखकर बात करने लगे।

कोलीग 1: क्या बात है, आज मिस्टर रवि टाइम पर?

कोलीग 2: लगता है ये गया ही नहीं।

कोलीग 3: अरे लगता है घर वालों ने आज घर से निकाल दिया।

सब आपस में इस बारे में बात कर रहे थे, मानो आज सूरज दक्षिण से निकला हो।

सब इतना बोल रहे थे कि मुस्कान को रवि से बात करने का मौका नहीं मिला, और मुस्कान अपनी सीट पर जाकर बैठ गई।

मुस्कान के दिमाग में बहुत कुछ चल रहा था…

क्या दूँ इनाम में, बोल तो दिया, अब देना तो पड़ेगा।

क्या दूँ? वॉच? नहीं-नहीं, ज्यादा हो जाएगा।

परफ्यूम? नहीं, उसे तो लड़ाई होती है।

एक काम करती हूँ, उसे लंच पर ले चलती हूँ, हाँ यही बेस्ट रहेगा, इस बहाने थोड़ा उसके साथ समय भी बिता पाऊँगी, और उसे बोल दूँगी… आज तुम्हारा लंच मेरी तरफ से, आज मैं ठेले वाले का बिजनेस बढ़ाने में मदद कर दूँगी।

ये सब डिसाइड करते हुए लंच टाइम भी हो गया।

मुस्कान ने ठीक 1:30 पर रवि की इंटरकॉम किया, लंच पर साथ चलने के लिए, लेकिन रवि ने फोन नहीं उठाया।

मुस्कान उठकर उसकी सीट पर गई, तो देखा वो सीट पर नहीं था।

ये जनाब कहाँ चले गए?

बगल वाले लड़के ने बोला—HOD सर के साथ क्लाइंट मीटिंग में।

ये सुनते ही मुस्कान का मुँह ऐसे उतर गया मानो जैसे बच्चे से कोई खिलौना छीन गया हो…

वो हताश होकर अपनी सीट पर आई और बैठ गई, कुछ लड़कियों ने उसे आकर लंच के लिए पूछा, उसने मना कर दिया कि आज मन नहीं है।

उसने अब सारा ध्यान अपने काम पर लगाया और मन ही मन बड़बड़ाने लगी ….सुबह से इनाम के चक्कर में काम भी ढंग से नहीं किया,

और इन्हें देखो, बिना बताए चले गए,

कोई नहीं, गए तो गए, मुझे क्या, मैं अब अपना ध्यान काम पर लगाऊँगी।

ऐसे मन ही मन वो खुद से बहुत बात कर रही थी, और साथ-साथ कंप्यूटर पर काम भी।

.

.

.

कुछ 1-2 घंटे काम करने के बाद फिर अचानक उसे इनाम और रवि की याद आ गई, और फिर वो मन में सोचने लगी कि जल्दी से कल आए और वो लंच करा दे रवि को।

नेक्स्ट डे, वो 5 मिनट पहले ऑफिस पहुँच गई, उसे बहुत बेचैनी थी, रवि से मिलने की, उसे लंच कराने की।

ऑफिस पहुँचने के बाद जब कुछ देर तक रवि नहीं आया तो पूछने पर पता चला कि रवि मीटिंग के खत्म होने के बाद ही क्लाइंट के साथ साइट विजिट पर वाराणसी चला गया।

ये सुनते ही मुस्कान की पूरी दुनिया हिल गई, उसे गुस्सा आने लगा, वो फिर मन में सोचने लगी—

पहले तो बिना बताए मीटिंग में चला गया,

हद है इस लड़के से, इतनी भी कर्टसी नहीं कि मुझे बता के जाता।

ऐसे ही 2 दिन और निकल गए, मुस्कान का सारा ध्यान बस रवि से मिलने में था, उसे लग रहा था ये 2 दिन जैसे 2 सदियों जैसे थे…

उस समय मोबाइल इतने प्रचलित नहीं थे, गिनती के 10% अमीर लोगों के पास ही फोन होते थे, काश उस दिन उसके पास भी होता तो वो झट से रवि से बात कर लेती और अपनी बेचैनी मिटा लेती।

लेकिन ये उन दिनों की बात है, जब किसी से बात करने के लिए मिलना पड़ता था, इंतजार करना पड़ता था, और उसका भी अलग ही मजा था, वो आजकल के जनरेशन कभी नहीं समझ सकते।

खैर, मुस्कान ने 2 दिन इंतजार में निकाल दिए, और वो कर भी क्या सकती थी…

क्या यही प्यार है?

आज मुस्कान अपने रोज के दिन की तरह तैयार हुई और टाइम से ऑफिस पहुँची। वो जैसे ही ऑफिस पहुँची, सीट पर सेटल हुई, उसने जैसे ही अपना सिस्टम ऑन किया इतने में उसकी आवाज आई—

गुड मॉर्निंग मुस्कान मैडम।

मानो उसकी गई हुई साँसें वापस आ गई हों, उसकी धड़कनें अपनी जगह वापस आ गई हों, जो वो 2 दिन से जिंदा लाश की तरह काम कर रही थी, उसमें रवि की आवाज ने जान फूँक दी हो।

उसने गुस्से में उसे बोला—किस बात का गुड मॉर्निंग?

अरे-अरे, सुबह-सुबह इतना गुस्सा?

मैं कोई गुस्सा नहीं हूँ।

अरे क्या मैडम, इतना तो जानते हैं हम आपको, कुछ तो गड़बड़ है।

मैं ठीक हूँ, कोई गड़बड़ नहीं, मुझे बहुत काम है, तंग मत करो।

अरे क्या मैडम, मैं 2 दिन बाहर क्या था, लगता है सारा मार्केटिंग का काम आपको ही मिल गया। कोई नहीं, अब मैं आ गया हूँ, मिलकर कर लेंगे, आप शांत रहिए।

मैंने बोला ना मुझे तंग मत करो, अपनी सीट पर जाओ।

मुस्कान अंदर से बहुत खुश थी, पर उसे गुस्सा बहुत आ रहा था, सुकून नहीं था शायद उसके अंदर… और उसे ये समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है।

वो खुद सोचने लगी; आज मुझे क्या हुआ? मुझे तो किसी पर चिल्लाना पसंद नहीं, फिर आज ये क्या हुआ है? मैं क्यों गुस्से में हूँ, क्यों चिल्ला रही हूँ, और रवि पर क्यों, जिसका मैं खुद 2 दिन से वेट कर रही थी, और जब वो आ गया तो उससे बात करने के बजाय मैं उस पर चिल्ला क्यों रही हूँ...

वो ये सारे सवाल अपने अंदर ढूँढ रही थी, जिनका उसके पास कोई जवाब नहीं था...

इतने में भानु भैया चाय लेकर आ गए—

मैम, गरमा-गरम चाय।

ले जाओ अपनी नकली चाय, मुझे नहीं पसंद ये मशीन की चाय, रोज पिला देते हो ये सर्फ वाली चाय, इसे चाय बोलते ही क्यों हो, इसे ज़हर घोषित कर दो, वो भी बकवास... पिछले 8 महीने से ये पिला रहे हो, ले जाओ।

अरे मैडम, इतने गुस्सा क्यों हो, मत पियो, मैं ले जाता हूँ।

अरे नहीं हूँ मैं गुस्सा, जिसे देखो बस यही बोले जा रहा है, अब नहीं पीनी ये नकली चाय तो नहीं पीनी।

इतने में रवि की आवाज आई—

उठो सीट से और चलो, मैं असली चाय पिलाता हूँ।

हाँ, तुम बनाओगे अब सिलेंडर और गैस लाकर?

अरे मैडम, चलो तो सही, एक अड्डा दिखाता हूँ अपना।

दोनों ऑफिस के बाहर एक छोटी सी चाय की टपरी की तरफ जाने लगे,

इतने में गेट पर उन्हें और 2 लोग मिल गए, जो अक्सर रवि के साथ चाय पीते थे, रवि ने उन्हें भी बुला लिया।

चलो भाई, अगर चाय पीनी है तो।

अरे नेकी और पूछ-पूछ, चलो।

चारों टपरी की तरफ चल दिए।

मुस्कान को अभी भी गुस्सा आ रहा था, पर गुस्से की वजह अब ये दो लोग थे। मुस्कान अपने मन में सोचने लगी—अच्छा-खासा बस हम जा रहे थे, पता नहीं रवि ने क्यों इन्हें बुलाया, और ये भी अजीब हैं, चल दिए चाय पीने।

इतने में रवि ने चाय का ऑर्डर दिया—

भैया, 4 स्पेशल चाय, हमारी वाली अदरक-इलायची डाल के।

मैं इलायची नहीं पीती, सिर्फ अदरक डालना भैया—मुस्कान ने कहा।

भैया ने बढ़िया सी 4 चाय दी अदरक वाली।

चारों चाय पीने लगे।

रवि ने पूछा—चाय सही है मैडम, असली तो है ना, देख लो।

मुस्कान ने इग्नोर करते हुए कोई जवाब नहीं दिया।

उधर से एक लड़का बोला—हाँ भाई, ये असली चाय है, वरना ऑफिस में तो नकली चाय मिलती है।

इस पर मुस्कान को थोड़ी हँसी आ गई, कि चलो कोई तो है जिसे वो चाय नकली लगी।

रवि ने बोला—तो क्या 250 लोगों की चाय भानु भैया बनाएँगे? कितना टाइम लगेगा बेचारे को, फिर तो हम जैसे लेट आने वालों को लंच टाइम तक चाय मिलेगी, इसलिए मशीन बढ़िया है उनके लिए।

मुस्कान का पूरा समर्थन था रवि की बात से, पर उसने हाँ नहीं भरी और चुपचाप चाय पीती रही।

अब वो तीनों वहीं सब बातें कर रहे थे जो हर कोई चाय की टपरी पर करता है….

.

.

.

कितना कमा लेते हो भैया दिन का?

अरे भैया से क्यों पूछ रहे हो, खुद कैलकुलेट कर लो।

अरे नहीं भाई, कैलकुलेट करके जॉब छोड़नी पड़ेगी।

वैसे भी मेरा सपना है जॉब छोड़कर चाय-मैगी बेचूँ, इसमें खूब पैसे हैं।

.

.

.

मुस्कान चुपचाप सब सुन रही थी और चाय पी रही थी।

चाय खत्म करते ही रवि पैसे देने लगा, इतने में मुस्कान ने अपने पैसे निकाले और बोली—ये मेरा हिस्सा।

अरे मैडम, क्या अब चाय का भी हिसाब करोगी?

अगली बार आप पिला देना, रखो अपने पैसे।

मुस्कान ने कुछ नहीं कहा और पैसे वापस रख लिए।

जब वो चारों जाने लगे तब मुस्कान पलटी और जोर से बोली—भैया, चाय बहुत मस्त थी, एकदम असली, घर जैसी, मजा आ गया, थैंक यू।

रवि हल्का सा मुस्कुराया और सिर हिलाया और चलने लगा।

सब ऑफिस पहुँचे और काम करने लगे, काम करते-करते अब लंच का टाइम हो गया था।

मुस्कान का मन था कि वो रवि से बोल दे कि उसका इनाम अभी पेंडिंग है और वो उसे लंच पर ले जाएगी,

लेकिन वो कहते हैं ना, इश्क अच्छे-अच्छों के छक्के छुड़ा देता है….. इतना बोलने वाली बोल्ड और ब्लंट मुस्कान की आज हिम्मत नहीं हो रही थी कि वो उसे लंच के लिए पूछे, ऐसा लग रहा था मानो लंच नहीं डेट के लिए पूछना हो।

इतने में रवि आया और पूछा—

आओ मैडम, लंच करा दूँ।

मुस्कान को लगा—ये क्या, मैं सोच रही हूँ कैसे पूछूँ और ये खुद पूछने आ गया।

अरे क्या सोच रही हो, चलो लंच कराता हूँ, आज से दीदी रख ली, उन्होंने जोश में पहले दिन ज्यादा खाना पैक कर दिया, आओ साथ में खा लो।

मुस्कान ने कहा… मैं लंच लाई हूँ, वो वेस्ट हो जाएगा।

अरे मैडम, खाना कभी वेस्ट नहीं होता, मिल-जुल के खा लेंगे।

नहीं, फिर कभी खा लूँगी दीदी के हाथ का खाना, तुम किसी और को पूछ लो।

हाँ मैडम, क्यों खाएँगी आप दीदी का खाना, क्यों खाएँगी आप एक गरीब के घर का खाना (रवि ने मजाक में कहा)।

मुस्कान को फिर गुस्सा आ गया—हाँ, तुम्हें तो यही लगता है, मैं मशीन की चाय नहीं पीती, दीदी के हाथ का खाना नहीं खाती, नखरे हैं मेरे बहुत, और तुम सब कर लेते हो, जैसे बहुत दिलेर हो।

रवि को समझ आ गया कि आज माहौल गरम है, उसने अपना लंच खत्म किया और सीट पर आकर मुस्कान को इंटरकॉम किया....

क्या हुआ? सुबह से लग रहा है कि आप परेशान हो, घर में तो सब ठीक है ना, या मेरे पीछे ऑफिस में कुछ हुआ? आपको इतने गुस्से में कभी नहीं देखा, बताओ मुस्कान क्या परेशानी है, किसने परेशान किया?

किसी की मजाल जो मुझे परेशान करे।

ये बात, ये है हमारी मुस्कान, मैं वहीं सोचूँ, ऐसा कौन है जो शेरनी के मुँह में हाथ डालकर अपनी शामत बुलाएगा।

और क्या, किसकी शामत आई है।

फाइनली मुस्कान के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आई।

रवि ने फोन रखा और काम करने लगा।

अब मुस्कान सोच रही है कि उसने अपने गुस्से की वजह से एक अच्छा मौका खो दिया रवि के साथ लंच करने का और उससे बात करने का...

पर गुस्सा है ही ऐसी चीज जो सब बर्बाद कर देता है।

वहीं दूसरी तरफ रवि ने पूरी दोस्ती निभाई, क्योंकि शायद यही होती है दोस्ती, जो आजकल के बच्चे शायद कम समझेंगे, जब एक दोस्त उदास हो या नाराज हो तो उसे एक दोस्त ही संभाल सकता है, और फिर हमें चाहिए भी क्या—कोई ऐसा जो हमें सुन ले और हमारी हर बकवास में हाँ से हाँ मिला दे।

और यही किया बस रवि ने, ऐसा ही कुछ रिश्ता है पिछले कुछ महीनों से रवि और मुस्कान का... दोनों दोस्त बन चुके हैं और वो भी अच्छे वाले, एक-दूसरे को बहुत अच्छे से समझते हैं, मुस्कान जो भी करती है सब बताती है रवि को, और रवि भी सब शेयर करता है।

आज का दिन आधा गुस्से में और आधा काम में कैसे निकला किसी को पता नहीं चला।

बस में घर जाते वक्त मुस्कान बस यही सोच रही थी कि आखिर क्यों उसे इतना गुस्सा आ रहा था, वजह ना चाय थी ना लंच, फिर क्या वजह थी, और रवि ने इनाम क्यों नहीं माँगा, क्या उसे नहीं चाहिए, या वो भूल गया… बस यही सब सोचते-सोचते मुस्कान घर पहुँच गई।

7:45 हो रहे थे… मुस्कान बस घर में घुसी ही थी…. तभी लैंडलाइन की बेल बजी—

ट्रिंग-ट्रिंग… ट्रिंग-ट्रिंग…

हैलो।

नमस्ते आंटी, मैं रवि, मुस्कान के ऑफिस से, मुस्कान से बात हो सकती है क्या?

अरे रवि, नमस्ते बेटा, मुस्कान बहुत बात करती है तुम्हारे बारे में, कैसे हो तुम?

मैं अच्छा हूँ आंटी, आप और सब कैसे हैं?

सब अच्छे हैं बेटा, रुको मैं मुस्कान को बुलाती हूँ।

मुस्कान… मुस्कान… तुम्हारा फोन है बेटा।

हैलो।

डिस्टर्ब तो नहीं किया?

रवि की आवाज सुनते ही मानो मुस्कान के दिल ने एक हार्टबीट मिस कर दी हो, उसकी एक साँस बीच में ही रुक गई हो, मुस्कान की पूरी दुनिया एक सेकंड के लिए रुक गई।

तुम्हें मेरा नंबर कहाँ से मिला?

अरे मैडम, HR पर सिर्फ आपका जादू नहीं है, मेरा भी है, मैं भी मार्केटिंग वाला हूँ, बस निकाल लिया आपका नंबर।

इतनी मेहनत? क्या हुआ, कहीं आग-वाग लगी है क्या जो इतनी मेहनत की तुम जैसे आलसी इंसान ने?

हाँ, आग ही लगी थी सुबह मेरे दोस्त के दिमाग में… जो वो गुस्सा थी… बस यही चेक करने के लिए फोन किया, सब ठीक है या अभी फायर ब्रिगेड की जरूरत है।

ये सब सुनकर मुस्कान के चेहरे पर स्माइल आई, क्योंकि ये पहली बार था जब कोई मुस्कान की इतनी केयर कर रहा था, वरना हमेशा मुस्कान ही सबकी केयर करती थी।

हाँ-हाँ, मैं कोई हमेशा गुस्से में थोड़ी ही होती हूँ, अब सब ठीक है।

थैंक गॉड, मुझे लगा अगर गुस्सा शांत नहीं हुआ तो मुझे कल ऑफ लेना पड़ेगा, ताकि मैं बच सकूँ तुमसे।

क्यों लोगे ऑफ? जब चाहे गायब हो जाते हो, ऑफिस में काम करने आते हो या गायब होने, कभी मीटिंग, कभी साइट विजिट, कभी ऑफ… एक काम करो जॉब छोड़ दो, घर बैठ जाओ… कल ऑफ करना पड़ेगा एंड ऑल।

अरे बाप रे, मेरे कुछ दिन ना आने पर इतना गुस्सा, कहीं मेरी वजह से ही तो नाराज नहीं हो तुम?

तुम इतने इंपॉर्टेंट भी नहीं हो, तुम्हारे होने ना होने से कोई फर्क नहीं पड़ता।

क्या पता मेरे बिना 2 दिन में फर्क पड़ा हो।

पागल-वागल हो क्या, मुझे फर्क नहीं पड़ता, और वो भी तुम्हारे ना होने का तो बिल्कुल नहीं।

फिर ठीक है, मुझे लगा कहीं मेरे प्यार-व्यार में तो नहीं पड़ गई।

प्यार वो भी तुमसे, शक्ल देखी है? तुम वाराणसी गए थे या मनाली, जो जय बाबा भोले करके आए हो….

अरे अच्छी तो है मेरी शक्ल, सब कहते हैं मैं हीरो लगता हूँ।

गलतफहमी है लोगों को, और तुम्हें तो बहुत ज्यादा, बंदर जैसी तो शक्ल है तुम्हारी और आवाज जैसे भोंपू, तुमसे नहीं हो सकता मुझे प्यार।

ठीक है, आज जी लेंगे हम तुम्हारे प्यार के बिना, चलो कल मिलते हैं, गुड नाइट।

दोनों ने फोन रखा, रवि जल्दी ही सो गया, पर मुस्कान बेचैन थी, रात भर उसके दिमाग में बस यही चल रहा था—क्या यही प्यार है? उसके ना आने से गुस्सा, उसके ना मिलने पर चिड़चिड़ापन, क्या इसे ही प्यार कहते हैं?

हे भगवान, मुझे रवि से कैसे हो सकता है प्यार, मुझे तो वो पसंद भी नहीं और वो तो इतना गोरा है, कैसे पसंद आया वो मुझे…

नहीं-नहीं, ये प्यार नहीं हो सकता।

लेकिन उसका फोन आने से मैं इतनी खुश क्यों हूँ…

ऐसे ही सोचते-सोचते मुस्कान ने रात काट दी।

जब भी हमें प्यार होता है, तो शुरुआत में कुछ समझ नहीं आता। हम बस यही सोचते रहते हैं—ऐसा क्यों हो रहा है? मैं तो ऐसा नहीं हूँ... मुझे तो इन चीज़ों से फर्क नहीं पड़ता।

पर असल में... प्यार होता ही ऐसा है, जिसमें उन चीज़ों से भी फर्क पड़ने लगता है, जिनका होना या न होना कोई मायने नहीं ... और कभी-कभी उन चीज़ों से फर्क नहीं पड़ता, जो बहुत ज़रूरी होती हैं।

प्यार की पहली सुबह

पिछली रात मुस्कान मुश्किल से 2 घंटे सोई होगी, और इसी वजह से उसकी आँखें थोड़ी सूजी हुई थीं… मुस्कान उठी और अपने बेड पर ही कुछ देर तक बैठी रही…

ये सुबह कुछ अलग थी, जैसे मानो अभी-अभी बनारस के घाट पर उगते हुए सूरज की लालिमा ने छू के, गंगा नदी के पानी को हल्का सा गुनगुना और गेहुँआ कर दिया हो… सूरज का प्रतिबिंब पानी में एसे समा गया हो, जैसे सूरज और नदी एक ही हों…

कुछ ऐसा ही आज मुस्कान महसूस कर रही थी, शायद आज की सुबह ने उसे वो सारे जवाब दे दिए जो बीती रात नहीं दे पाई… और मुस्कान को यकीन हो गया था कि हाँ, यही प्यार है…

मुस्कान मस्ती में किचन में घुसी और बोल…

गुड मॉर्निंग मम्मी।

गुड मॉर्निंग? ये तुम्हारा ऑफिस नहीं, घर है, यहाँ नमस्ते करते हैं, आए बड़े अंग्रेज!

अरे क्यों गुस्सा कर रही हो सुबह-सुबह, देखो तो आज कितनी अच्छी सुबह है।

क्या अच्छी सुबह, सुबह से तुम्हारे पापा को बोल रही हूँ दूध ले आएँ, पर वो और उनका न्यूज़पेपर… बताओ भला दूध नहीं आएगा तो कैसे चाय बनेगी, चाय नहीं बनेगी तो नाश्ता कैसे करोगी, और ऐसे तो तुम ऑफिस के लिए लेट हो जाओगी…

लेट? नहीं मम्मी, आज बिल्कुल लेट नहीं हो सकती, लाओ मुझे पैसे दो, मैं दूध ले आती हूँ…

मुस्कान ने फटाफट से चप्पल पहनी और दूध लेने चली गई…

आज उसे किसी कीमत पर लेट नहीं होना था, आखिर ये प्यार की पहली सुबह थी, उसे उस इंसान का चेहरा देखना था जिससे उसे प्यार हो गया था।

मुस्कान फटाफट से दूध लाई और नहाने चली गई।

नहाने के बाद करीब 5 मिनट तक वो अपने लिए कपड़े ढूँढ रही थी, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था वो क्या पहने, बस उसे ये पता था आज उसे अच्छा लगना है, रवि के लिए, कुछ ऐसा कि वो सिर्फ उसे ही देखे।

पर मुस्कान को कुछ समझ नहीं आ रहा था, उसने अपनी आधी अलमारी छान के बेड पर रख दी थी, सारे कपड़े इधर-उधर थे, और वो अपनी अलमारी और बेड की तरह ही उलझी हुई थी कि क्या पहने, उसे तो ये भी नहीं पता था कि रवि का फेवरेट कलर क्या है, उसे वेस्टर्न कपड़े पसंद हैं या सूट-सलवार…

इतने में मुस्कान की मम्मी ने रूम में घुसते ही जोर से बोला—

हे भगवान, ये क्या हाल बना रखा है, उधर तुम्हारे पापा से सुबह से दिमाग खराब किया है और अब ये बेटी पूरा घर फैला के बैठ गई, कोई फैशन परेड है क्या, जो इतने कपड़े निकाल लिए?

अरे मम्मी चिल, गुस्सा क्यों हो रही हो, चिंता मत करो, मैं सब रख दूँगी।

पर तुमने इतने कपड़े निकाले ही क्यों, क्या हुआ, क्या है?

अरे आज मीटिंग है, उसके लिए कपड़े समझ नहीं आ रहे, मुझे बेस्ट दिखना है आज।

मुस्कान की मम्मी ने नया सा बेस्ट टॉप निकाला—लो ये टॉप पहन लो, ये तुम पर बहुत अच्छा लगता है।

सच में मम्मी, मैं अच्छी लगती हूँ इसमें?

हाँ मेरी माँ, और अब तैयार हो, वरना लेट हो जाएगी।

अरे नहीं मम्मी, लेट नहीं होना, थैंक यू… तुम अब बाहर जाओ, मैं फटाफट रेडी हो जाती हूँ।

मुस्कान को रेडी होने में बस 2-3 मिनट लगते थे, उसे मेकअप करना पसंद नहीं था, और वो ज़रा भी मेकअप नहीं करती थी।

पर उसका मन था इयररिंग्स बदलने का, ड्रेस से मैच करता हुआ कुछ पहनने का… पर उसने नहीं किया, वो खुद उस टॉप में देखकर खुश थी, वो खुद के लिए परफेक्ट फील कर रही थी, और वो कॉन्फिडेंट थी कि रवि को भी वो अच्छी लगेगी।

.

.

वो आज टाइम से 10 मिनट पहले ही ऑफिस पहुँच गई… आज की सुबह कुछ ऐसी थी कि उसे ऑफिस भी बहुत अच्छा लग रहा था, मानो ये दुनिया का बेस्ट प्लेस हो… और वो अपनी सारी जिंदगी इसी ऑफिस में रवि को देखते-देखते काट देगी।

9 बजते ही उसका सारा ध्यान रवि की सीट पर था, कि कब रवि आएगा और वो कब उसे देखेगी।

पर हमेशा की तरह मिस्टर लेट-लतीफ 15 मिनट लेट थे… उसे फिर से गुस्सा आने लगा था, पर उसने सोचा अब वो गुस्सा नहीं करेगी… कल का पूरा दिन उसने गुस्से की वजह से खराब कर दिया, अब नो मोर गुस्सा एंड ऑल।

इतने में रवि आ गया, रास्ते में सबको गुड मॉर्निंग कहता हुआ… और अपनी जुल्फें संवारता हुआ।

मुस्कान को लगा सारी गुड मॉर्निंग वो उस तक आने से पहले जैसे खर्च कर देगा और मुस्कान के लिए तो गुड मॉर्निंग बचेगी ही नहीं।

मुस्कान के पास पहुँचते ही उसने उसे देखा और बोला—

गुड मॉर्निंग मिस एंग्री बर्ड।

गुड मॉर्निंग मिस्टर लेट-लतीफ (हँसते हुए)।

ऐसा लग रहा था मानो बस अभी उनकी कोई नोकझोंक शुरू होने वाली हो… पर बस गुड मॉर्निंग बोलकर रवि अपनी सीट पर बैठ गया।

रवि को सीट पर बैठा देख मुस्कान को गुस्सा आने लगा—बस गुड मॉर्निंग?

मैं कल से इतनी परेशान हूँ, इतनी बेचैन हूँ, सुबह सबसे बेस्ट टॉप पहन के आई, मुझे देखा तक नहीं ढंग से और बस गुड मॉर्निंग…

मुस्कान ने फिर से मन ही मन में बड़बड़ाना शुरू कर दिया—

इसके लिए सुबह इतनी मेहनत की, मम्मी की हेल्प ली और इसे कुछ पड़ी ही नहीं है…

मुस्कान के पेट में हजारों तितलियाँ थीं, उसका दिल बहुत बेचैन था, वो ये जानना चाहती थी जो कल उसे फील हुआ अगर वो प्यार ही है तो वो ये कैसे कन्फर्म करे…

क्या वो किसी से पूछे कि प्यार में कैसा होता है?

या वो रवि से ही पूछ ले कि क्या वो उसे पसंद करती है, आखिर रवि उसे काफी अच्छे से जानता था…

बस यही सोचते-सोचते उसने सारा दिन निकाल दिया।

प्यार, पागलपन और सबर

ऐसे ही रवि को देखते-देखते और प्यार को समझते-समझते कुछ महीने निकल गए…

मुस्कान मानो ऑफिस काम करने कम, सिर्फ रवि को देखने और उससे बात करने आती हो…

उसका काफी समय रवि की सीट पर या चाय की टपरी पर जाता था…

अब उनकी दोस्ती और गहरी हो चुकी थी, पूरा ऑफिस जानता था कि मुस्कान और रवि बेस्ट बडीज़ हैं…

कुछ लोग तो उनके पीठ पीछे ये भी बोलने लगे थे कि उनका चक्कर चल रहा है… पर अब किसी को क्या पता कि सामने क्या है।

और ऐसा कई बार होता है, हमें लगता है हम बहुत होशियार हैं, हमें सब पता है, पर असलियत में हम वही सोचते हैं जो हमारे दिमाग में होता है, और वैसे भी ये इंसानी फितरत है कि एक लड़का और लड़की को साथ में देख कोई पहले ये नहीं सोचता कि वो भाई-बहन भी हो सकते हैं, पहले यही सोचते हैं कि बॉयफ्रेंड और गर्लफ्रेंड ही होंगे।

खैर, इन सब बातों से रवि और मुस्कान दोनों को कोई फर्क नहीं पड़ता था,

मुस्कान तो वैसे भी बहुत खुले ख्यालों वाली लड़की थी, और रवि को दिन-दुनिया से कोई मतलब ही नहीं था… और वो कहते हैं ना—कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना।

दिल्ली की सर्दी जोर-शोर पर थी, दिसंबर का महीना बस आ ही चुका था, सब दिवाली मना के घर से आ चुके थे… रवि भी 3-4 दिन के लिए गया था…

और हमेशा की तरह जब भी रवि घर जाता था तो मुस्कान को लगता था जैसे वो जी नहीं पाएगी… पर जैसे-तैसे वो उसके बिना वाले दिन काट ही लेती थी…

वो एक दिन

आज यूज़ुअल डे है और दिसंबर की 3 तारीख…

मुस्कान हमेशा की तरह 5 मिनट पहले और रवि हमेशा की तरह 15 मिनट लेट…

अब दोनों की काफी बनती थी… और मुस्कान ने भी प्यार को दोस्ती पर हावी नहीं होने दिया, वो नहीं चाहती थी कि प्यार के चक्कर में वो दोस्त खो दे, और इस वजह से उसने कभी रवि को ये एहसास नहीं होने दिया, वो वैसे ही उससे लड़ती-झगड़ती, नोकझोंक करती थी, ताकि उसे ज़रा भी भनक न पड़े।

थोड़ी देर में इंटरकॉम बजा और रवि की आवाज आई—

अच्छा सुनो… आज लंच साथ करेंगे, मुझे तुमसे कुछ कहना है।

क्या हुआ, सब ठीक? तुम अभी भी बता सकते हो।

हाँ सब ठीक है, नहीं यहाँ नहीं, बाहर लंच टाइम में।

ओके, फिर 1:30 मिलते हैं।

मुस्कान इस इंटरकॉम से इतनी खुश थी, जैसे वो लंच पर नहीं डेट पर जा रही हो…

वो 1:25 पर वॉशरूम गई, अपना मुँह धोया, बाल ठीक किए, हल्का सा लिप ग्लॉस लगाया और कुछ सेकंड तक खुद को देखती रही… उसके मन में बहुत सवाल थे—

ऐसी क्या बात है जो उसे मुझे बतानी है? वो अपनी हर बात रोज तो बता देता है, फिर ऐसी कौन सी बात है जो मुझे नहीं पता…

कहीं उसे भी मुझसे प्यार तो नहीं हो गया...

कहीं वो आज मुझे कुछ बोल तो नहीं देगा...

कहीं उसे ये पता तो नहीं चल गया कि मैं उसे पसंद करती हूँ...

हे राम, मैं क्या कहूँगी अगर उसने कुछ पूछा तो...

उसने कहीं सीधा आई लव यू बोल दिया तो... या फिर शादी के लिए पूछा तो... हे भगवान, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा...

थोड़ी देर वॉशरूम में ये सब सोचकर वो बाहर आई और सीट पर आकर इंटरकॉम किया - तो कब चल रहे हो, मुझे बहुत जोर से भूख लग रही है।

बस 5 मिनट और।

5 मिनट बाद वो दोनों साथ में नीचे गए... रवि इस बार उसे अपने यूज़ुअल ठेले पर नहीं बल्कि पास के एक रेस्टोरेंट में ले गया, जहाँ कम भीड़ थी, वहाँ एक खाली टेबल पर दोनों जाकर बैठ गए।

मुस्कान ने पूछा—बताओगे क्या हुआ? इतने महंगे रेस्टोरेंट में लाए हो, जरूर ही कुछ खास बात है।

हाँ, बात तो इंपॉर्टेंट ही है, तुम्हें याद है तुमने मुझे इनाम देना था 9 बजे आने का।

मुस्कान के चेहरे पर स्माइल आई मुझे तो अच्छे से याद है, मुझे लगा तुम भूल गए होगे, तो क्या सोचा है, क्या इनाम चाहिए फिर मुझसे?

यार, तुम तो मुझे जानती हो, मैं कितना नालायक हूँ, स्पेशली लड़कियों के मामले में... बस उसी में सलाह चाहिए तुम्हारी, तो सोचा आज ही इनाम माँग लूँ।

ये बात सुनते ही फिर मुस्कान के मन में कई सवाल आ गए—क्या अब ये प्रपोज करेगा… क्या कहेगा ये… कहीं सीधा शादी के लिए पूछ लिया तो… या पहले हम डेट करेंगे, मूवी पर जाएँगे, साथ में घूमेंगे…

उसकी धड़कन बढ़ गई, उसे सर्दी में भी पसीना आने लगा मानो वो कोई एग्जाम देने वाली हो… उसने अपने सारे इमोशन्स को होल्ड किया और नॉर्मल होते हुए बोली –

लड़की? प्यार-व्यार हो गया तुम्हें?

इतने में वेटर उनका खाना ले आया, जो कि मुस्कान का फेवरेट था—चाइनीज़। वेटर अब मुस्कान और रवि के बीच में आ रहा था, मुस्कान रवि को देख नहीं पा रही थी, उसने भैया को बोला –

जल्दी रखो और आप जाओ, हम सर्व कर लेंगे।

अरे करने दो भैया को, उनका काम है ये, अभी टाइम है हमारे पास।

इतने में वेटर ने खाना सर्व किया।

मुस्कान ने भैया के जाते ही फिर से पूछा—हाँ, तो प्यार-व्यार में हो क्या, जो लड़की की बात कर रहे हो?

अरे मैडम, ऐसे मेरे नसीब कहाँ कि प्यार-व्यार हो, और वैसे भी कौन मिलेगी मुझे, तुम ही तो कहती हो मेरी बंदर जैसी शक्ल है।

अच्छा, फिर क्या बात है, जल्दी बताओ।

रवि ने अपने बैग में से एक लैपटॉप निकाला, ये रवि का पर्सनल लैपटॉप था, मुस्कान ने कई बार रवि के पास देखा था।

इसमें क्या करना है हमें? तुम लंच में भी काम कराओगे क्या? ये है तुम्हारी इंपॉर्टेंट बात?

उन दिनों पर्सनल लैपटॉप बहुत कम होते थे… उसका लैपटॉप देखकर वेटर भी हैरान था।

रवि ने लैपटॉप खोला और उसमें जीमेल पर लॉगिन किया और मुस्कान की सामने वाली सीट से उठकर बगल वाली सीट पर आकर बैठ गया।

मुस्कान को समझ नहीं आ रहा था, रवि कर क्या रहा है।

रवि ने एक मेल खोली जिसमें कुछ अटैचमेंट्स थीं।

रवि ने अटैचमेंट पर क्लिक किया और उसमें से फोटो डाउनलोड की, और बोला—

देखो, मम्मी ने ये कुछ लड़कियों की फोटो भेजी है, अब तुम मुझे इतने अच्छे से जानती हो, तो बताओ कौन सी सही रहेगी मेरे लिए… ऑफिस में इसलिए नहीं दिखाया, वरना सब मजाक उड़ाते, और वैसे भी ये पर्सनल मैटर है।

रवि बहुत कुछ बोल रहा था, पर मुस्कान के कानों में कुछ नहीं जा रहा था,

बस एक ही लाइन बार-बार गूंज रही थी—

"तो बताओ कौन सी सही रहेगी मेरे लिए…"

"तो बताओ कौन सी सही रहेगी मेरे लिए…"

"तो बताओ कौन सी सही रहेगी मेरे लिए…"

उसकी जो बढ़ी हुई धड़कनें थीं वो अब धीरे हो गई थीं, सिर गर्म की जगह ठंडा था, साँस भी स्लो हो गई थी, मानो उसकी दुनिया में एकदम से भूकंप आया हो और सब शांत कर गया हो, सब रुक गया हो, सब ठहर गया हो…

पर वो मुस्कान है—एक स्ट्रॉन्ग, इंडिपेंडेंट और कंट्रोल्ड लड़की… उसने अपने सारे इमोशन्स साइड किए और पानी पिया… और बोली -

लड़की? तुमसे कौन शादी करेगा, शक्ल देखी है तुमने अपनी? और तुम मुझसे क्यों पसंद करवा रहे हो लड़की, लड़की बाद में मुझे गाली देगी कि मैंने कैसे लड़के के लिए उसे चुना…

ना बाबा, ये पाप मुझसे नहीं होगा।

हाँ ठीक है, ज्यादा भाव मत खाओ, मुझे समझ नहीं आ रहा था तो तुमसे पूछा… वैसे भी तुम मुझे अच्छे से जानती हो, तो चुनो कोई लड़की…

अच्छा, और क्या-क्या देखूँ लड़की में?

रंग गोरा होना चाहिए… पतली होनी चाहिए… और वो …

वाह…!! गोरी-पतली…. पढ़ाई-वढ़ाई नहीं देखनी तुम्हें, बस सुंदरता देखनी है… मैं तो काली और मोटी पसंद करूँगी।

नहीं, अपने जैसी मत देखना, वो तो एक ही काफी है… और पढ़ाई-वढ़ाई सब मम्मी-पापा ने देख के भेजा है, तुम बस ये बताओ मेरे साथ में कौन अच्छी लगेगी।

रवि का हर सवाल मुस्कान के हजारों टुकड़े कर रहा था, और मुस्कान हर जवाब के बाद उन टुकड़ों को जोड़ रही थी, फिर से टूटने के लिए।

रवि ने एक-एक करके फोटो दिखानी शुरू की—

ये प्रीति है…

ये सुनैना…

दीपिका…

रवि जो भी बोल रहा था, मुस्कान को सब दुखी कर रहा था।

रवि ने मुस्कान को हिलाया और पूछा—कोई सही लगी या मना करूँ इन सब के लिए?

मैं ये सब में कोई हेल्प नहीं करने वाली, वैसे भी अरेंज मैरिज मेरे पल्ले नहीं पड़ती, इससे बढ़िया तो लव मैरिज है, नो झंझट एट ऑल।

लव मैरिज? तुम लव मैरिज करोगी? बॉयफ्रेंड है क्या तुम्हारा?

वाह, अगर होता तो तुम्हें पता नहीं होता?

क्या पता तुमने ना बताया हो, वैसे भी दिल्ली की लड़कियाँ तो स्कूल-कॉलेज में ही बॉयफ्रेंड बना लेती हैं, तुम तो माशाअल्लाह वर्किंग हो।

बकवास मत करो… दाँत तोड़ दूँगी तुम्हारे, मैं सब बताती हूँ।

हमें क्या पता, क्या पता तुमने ये राज छुपाया हो।

राज छुपाया हो? बातें तो तुम छुपाते हो, तुमने मुझे बताया क्यों नहीं कि तुम्हारे घर वाले तुम्हारे लिए लड़की देख रहे हैं?

अरे मुझे खुद नहीं पता था, कल रात ही मम्मी ने फोन पर बताया और बहन ने मेल भेज दी… मैंने तो मेल भी आज तुम्हारे सामने ही ओपन की है।

अब कोई समझ आ रही है तो बताओ… तो मम्मी से बात करूँ?

मैंने कहा ना, मैं ये सब नहीं कर सकती, तुम्हें जो सही लगे वो कर लो, बस मुझे शादी में बुला लेना।

ठीक है, मैं बुला लूँगा… अच्छा ये बताओ तुम लव मैरिज करोगी, घर वाले करने देंगे?

हाँ, उसमें क्या है, मेरी मम्मी तो झट से मान जाएँगी, और पापा को वो मना लेंगी, और भाई तो वैसे भी कुछ नहीं कहेगा।

सही है, हमारे यहाँ तो बवाल हो जाएगा, पहाड़ी पंडित हूँ, तो पहाड़ी पंडित से ही शादी होगी, इवन नॉन-ब्राह्मण भी अलाउड नहीं है, चाहे पहाड़ी ही क्यों ना हो।

अच्छा, अगर ये सब चोंचले नहीं होते, तुम करते लव मैरिज?

हाँ कर लेता, लव मैरिज किसको बुरी लगेगी, अगर हमसफर पसंद का हो, पहले से जानते हो, तो शायद जिंदगी आसान होती होगी…

हाँ, होती तो होगी।

तुम बताओ, तुम्हें कैसा लड़का पसंद है, और कब हो रही है तुम्हारी लव मैरिज?

कब का तो पता नहीं, लड़का मुझे बस गोरा नहीं चाहिए, और अच्छा सेंस ऑफ ह्यूमर हो, अच्छा कमाता हो, मेरे पेरेंट्स का ध्यान रखे, उन्हें प्यार करे और मुझे बराबर समझे, बस ऐसा ही चाहिए।

ऐसा तो नहीं मिलेगा, तुम्हें 4-5 ढूँढने पड़ेंगे।

पागल हो क्या, मिल जाएगा, भगवान ने बनाया होगा ऐसा मेरे लिए, जिस दिन मुझे मिल गया तो तुम्हें बता दूँगी।

और अगर मैं किसी और शहर में हुआ, या नैनीताल चला गया तो?

मैं क्या बुढ़ापे में शादी करूँगी, जो तुम चले गए होगे… और अगर तुम दूर भी हुए तो मैं फेसबुक पर फोटो अपलोड कर दूँगी।

और मुझे पता कैसे चलेगा इससे तुम प्यार करती हो…. जितना मैं तुम्हें जानता हूँ, तुम तो बहुत लड़कों के साथ फोटो अपलोड कर दोगी जो भी तुम्हारा फ्रेंड होगा… फिर मैं कैसे समझूँगा?

चलो ठीक है, मैं जिस दिन ग्रीन साड़ी में एक लड़के के साथ फोटो अपलोड करूँ, समझ जाना ये वही है।

अच्छा, बहुत सवाल कर रहे हो आज… लंच पर आए थे और 30 मिनट हो गए, चलो वरना शर्मिष्ठा छोड़ेगी नहीं।

हाँ-हाँ, चलो।

ऐसे कहकर दोनों ऑफिस पहुँच गए।

अब दोनों के पास कीपैड वाला नोकिया मोबाइल भी था और फेसबुक पर अकाउंट भी... अब लाइफ थोड़ी नई थी सबके लिए, लोगों को ढूँढना और कनेक्ट होना बहुत आसान था।

मुस्कान ने ऑफिस पहुँचकर तीनों लड़कियों को फेसबुक पर बहुत ढूँढा... पर उसे नहीं मिलीं।

उसने हारकर लॉगआउट किया, इतने में रवि का फोन आया और वो बोला—

सुनो, मैंने मम्मी को बोल दिया, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा, तुम्हें जो अच्छी लगे वो देख लो और मुझे बता देना।

ठीक है, मुझे क्यों बता रहे हो, जब फाइनल हो जाएगी तो बता देना, अब काम करने दो।

कुछ दिन हमारी जिंदगी में ऐसे होते हैं जिन्हें हम चाहकर भी नहीं भूल सकते... कभी-कभी अच्छी यादों की वजह से और कभी-कभी बुरी यादों की वजह से..."

"और आज का दिन मुस्कान के लिए बहुत भारी और ना भूलने वाला था... वो बस में बैठकर बस सभी लड़कियों के बारे में सोच रही थी, और उसकी आँखों से आँसू खुद-ब-खुद निकल रहे थे... वो खुद को चुप कराती, पर फिर रोना आ जाता...

उसने कई बार अपने आँसू पोंछे, ऐसा करते हुए उसे एक आंटी देख रही थीं, जैसे ही उसके बगल की सीट खाली हुई वो आंटी बगल में आकर बैठ गईं—

क्या हुआ बेटी, तुम क्यों इतना रो रही हो, घर में कोई बीमार है क्या, या कुछ हुआ है?

नहीं आंटी।

तो फिर क्या हुआ, कुछ ऑफिस की समस्या?

मुस्कान इस बात पर और जोर से रोने लगी।

अरे बेटा, ऑफिस वालों की बातों का बुरा नहीं मानते, मेरे हसबैंड भी बहुत परेशान रहते हैं इन ऑफिस वालों की वजह से... पर ये ऑफिस वाले हैं, सिर्फ 9-5 के साथी, इनके चक्कर में क्यों खुद को परेशान करना, इनके साथ थोड़ी ही जिंदगी काटनी है, रोओ मत, पानी पियो।

आंटी ने मुस्कान को बोतल दी और मुस्कान ने पानी पिया...

कभी-कभी एक अनजान शख्स भी हमें बहुत कुछ सिखा जाता है, कुछ ऐसा समझा जाता है जो हमें पता होता है पर हम समझना नहीं चाहते...

मुस्कान ने आंटी को थैंक यू बोला, गले लगाया और अपने स्टैंड पर उतर गई।

घर पहुँचकर उसने डिनर भी पूरा नहीं खाया, फिर अपने रूम में चली गई और आंटी की एक ही बात उसके दिमाग में घूम रही थी—

"इनके साथ थोड़ी ही जिंदगी काटनी है..."

"इनके साथ थोड़ी ही जिंदगी काटनी है..."

"इनके साथ थोड़ी ही जिंदगी काटनी है..."

यही सोचते-सोचते वो गीली आँखों के साथ सो गई।

प्यार का दर्द

आज मुस्कान ऑफिस लेट से आई, वैसे तो उसका मन था नहीं ऑफिस आने का, पर रवि को देखे बिना रहना भी उसे मंजूर नहीं था।

अक्सर जो शख्स हमें सबसे ज्यादा सुकून देता है, वही हमें दर्द भी सबसे ज्यादा देता है… और अब मुस्कान का दर्द और दवा दोनों रवि था।

पर चिंता तो इस बात की थी कि वो अब किसी और का होने वाला था… और यही बात मुस्कान को खाए जा रही थी।

अगले कुछ दिन मुस्कान ने ऐसे ही निकाल दिए…

कुछ बातें हम किसी को नहीं बता सकते, यहाँ तक उसे भी नहीं, जिसे हम सब बता देते हैं।

जनवरी की जोरदार ठंड दिल्ली में दस्तक दे रही थी।

आज ऑफिस बहुत शांत था।

रवि ने ऑफिस आते ही मुस्कान को अपना नया फोन दिखाया…उसका पुराना फोन खराब हो गया था। अरे वाह, मुबारक हो नया फोन …

अरे मम्मी ने जबरदस्ती दिलवाया है, एक लड़की पसंद कर ली, और वो चाहती हैं हम फोन पर कनेक्ट करें, ताकि एक-दूसरे को समझ सकें, और मेरा पुराना फोन चल नहीं रहा था, तो मम्मी ने ज़बरदस्ती दिलाया।

अच्छा, तो ये फोन होने वाली बीवी के लिए है बस, ठीक है हम नहीं करेंगे फोन…

अरे कैसी बात कर रही हो मैडम, सबसे पहले आपको ही दिखाया है, तो आप फोन कर सकती हो, वो भी रोज़।

हाँ जी सर, बस हमारा हक सिर्फ फोन करने तक ही है... (मुस्कान ने धीरे से उदास मन से कहा)

क्या कहा आपने, थोड़ा जोर से बोलो, सुनाई नहीं पड़ा।

अरे मैंने कहा, बताओ तो कौन सी लड़की पसंद की आंटी ने और फोटो दिखाओ (ऐसा कहकर मुस्कान ने फिर अपनी फीलिंग्स छुपा ली)।

मुस्कान अब प्यार, दर्द सब छुपाने में एक्सपर्ट हो गई थी, किसी को पता नहीं था उसके अंदर क्या चल रहा है।

प्रीति, फोटो मैं तुम्हें मेल कर दूँगा, तुम देख लेना।

क्या करती है मिस प्रीति?

बी.एड की तैयारी कर रही है, फिलहाल घर पर है।

अच्छा, तो तुम्हें टीचर मिली है, सही है, अब शायद तुम सुधर जाओ।

मैं बिगड़ा हुआ हूँ क्या?

हाँ, थोड़े तो हो, थोड़े बुद्धू और भोंदू भी हो, वो आकर सब ठीक कर देगी।

अरे बुद्धू क्यों, ऐसा क्या है जो मैं जानता या समझता नहीं...

बहुत कुछ है मिस्टर बुद्धू।

अच्छा, मुझे तो नहीं लगता।

खैर छोड़ो... कांग्रेचुलेशन।

रवि के जाते ही मुस्कान ने रवि और प्रीति का नाम एक साथ अपने नोटपैड पर लिखा और उसे जोर-जोर से मिटा दिया, मानो जैसे वो उनका रिश्ता मिटाना चाहती हो।

ऐसे ही कुछ 1 महीना और बीत गया, रवि ने मुस्कान को इंटरकॉम किया—

सुनो, मेरी सगाई की डेट फिक्स हो गई है 20 फरवरी, तो 4-5 दिन की छुट्टी अप्लाई कर दो, और घर पर बात कर लो।

कांग्रेचुलेशन, पर मेरा थोड़ा मुश्किल होगा।

क्यों, क्यों मुश्किल होगा? मैं ऑफिस में किसी को नहीं बुला रहा, बस एक तुम ही हो जिसे बोल रहा हूँ, और तुम भी मना कर दो।

मेरे पापा नहीं मानेंगे, आज से पहले अकेले इतनी दूर नहीं गई मैं।

अंकल से मैं बात कर लूँगा, बोल दूँगा मेरे घर जा रहे हैं, मैं ध्यान रखूँगा।

.

.

अरे तुम रहने दो, मैं खुद बात कर लूँगी।

ठीक है, और आज ही बात कर लेना, और जैसे ही अंकल हाँ बोलें मुझे तभी फोन करना, चाहे कितने भी बजे हों।

अरे कल बता दूँगी ना सुबह ऑफिस आकर।

फोन का क्या फायदा अगर तुरंत ना बताया जाए, मैं वेट करूँगा तुम्हारे कॉल का, बाय।

मुस्कान घर पहुँची, और हाथ-मुँह धोकर मम्मी के साथ डिनर की तैयारी करने लगी…

उसका मन बिल्कुल नहीं था सगाई में जाने का, पर उसे प्रीति को रवि के साथ एक बार देखना था।

खाना खाते वक्त उसने एकदम से बोला—

रवि की सगाई है 20 फरवरी की, उसने मुझे इनवाइट किया है।

अरे वाह, उसे हमारी तरफ से मुबारकबाद कहना—मम्मी ने कहा।

कहाँ है सगाई?—पापा ने पूछा।

नैनीताल।

नैनीताल? मैं भी चलूँगा—भाई बोला।

तू चला जा पहले, मैं रहने देती हूँ… उसके घर जाना है और सगाई है, शादी नहीं…मैं भी चलूँगा।

फिर तो 2 दिन में आना-जाना हो जाएगा—पापा ने पूछा।

नहीं पापा, 4 दिन तो लगेंगे—1 दिन पहले, 1 दिन सगाई का और 2 दिन हम घूम भी आएँगे।

मुस्कान की फैमिली बहुत एडवांस और फॉरवर्ड थी, किसी ने कुछ नहीं बोला, बस पापा ने उसे कुछ पैसे दिए और कहा—कपड़े ले लेना, फरवरी है तो ठंड भी बहुत होगी।

उसके बाद मुस्कान ने रवि को फोन नहीं किया।

9 बजे लैंडलाइन पर बेल बजी—

ट्रिंग-ट्रिंग…

हैलो।

नमस्ते आंटी, मैं रवि।

अरे रवि, आज हम तुम्हारी ही बात कर रहे थे, बेटा सगाई की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ, अंकल की और मेरी तरफ से।

और क्या नाम है लड़की का, कहाँ की है?

थैंक यू आंटी, प्रीति नाम है, उत्तराखंड की ही है, पंडित।

अच्छा, खुश रहो बेटा, मम्मी-पापा को भी हमारी बधाई देना।

जी आंटी, मुस्कान से बात हो जाएगी क्या?

हाँ बेटा।

.

.

हैलो।

तो फिर पैकिंग शुरू कर दो, आंटी की आवाज से लगा कि परमिशन मिल गई।

हाँ, मिल तो गई, बस कल छुट्टी अप्लाई करके बताऊँगी।

अरे वो तो हो जाएगी अप्रूव, HR तो हम दोनों से सेट है, भूल गई?

हाँ, तुमसे ही होगी सेट, मुझसे नहीं है।

ठीक है, मैं अप्रूव करवा दूँगा छुट्टी।

चलो, गुड नाइट, कल मिलते हैं।

नैनीताल

19 की शाम को रवि और मुस्कान ने दिल्ली के कश्मीरी गेट से नैनीताल जाने वाली 10 बजे की वोल्वो ली। दोनों ने अपना सामान रखा और अपनी सीट पर बैठ गए।

रवि ने बस में बैठते ही अपनी मम्मी को फोन करके बताया कि वो निकल रहा है, और उसके बाद बस से उतरकर नीचे कुछ खाने-पीने के लिए लेने चला गया।

उसने चिप्स, कोल्ड ड्रिंक लाकर मुस्कान की गोद में रख दिए—ये लो तुम्हारा चखना।

मैं इतना खाती हूँ क्या?

हाँ, मुझे याद है तुमने कहा था कि तुम्हें सफर में बहुत भूख लगती है, तो बस ले आया।

वरना भूखी शेरनी भारी पड़ सकती है।

अच्छा बच्चे, मैं भूखड़ हूँ?

अरे ऐसा तो नहीं कहा मैंने… मैंने तो शेरनी कहा

कुछ ज्यादा ध्यान नहीं रख रहे तुम मेरा।

प्रीति को पता चला, तो शादी से पहले ही डिवोर्स हो जाएगा।

उसे कौन बताएगा, तुम?

अच्छा छोड़ो ये सब, लाओ चिप्स का पैकेट खोलो, अब जब भूखड़ कह ही दिया, तो खा ही लेती हूँ।

उसके बाद दोनों ऐसे ही ऑफिस की बात करते-करते सो गए।

सुबह 5:30 बजे हल्की धुंध थी, पहाड़ों की ठंडी-ठंडी हवा पहाड़ों के घुमावदार कट के साथ बस से टकरा रही थी, इतने में ड्राइवर ने ब्रेक लगाकर एक चाय की दुकान पर बस रोक दी।

मुस्कान और रवि दोनों उठ गए।

ये कहाँ रुके हैं?

अरे चाय पीने, यहाँ की चाय बहुत अच्छी होती है, और यहाँ से व्यू भी बहुत अच्छा होता है, आओ चले तुम्हें मैं अपना उत्तराखंड दिखाऊँ।

मुस्कान इससे पहले नैनीताल आ चुकी थी, पर ये कुछ अलग नैनीताल था उसके लिए।

मुस्कान ने अपने बैग से अपना सोनी का डीजी कैम निकाला और रवि के पीछे-पीछे बस से उतर गई।

मुस्कान ने हल्के से नीले रंग का सूट पहन रखा था, आसमानी नीला, और सूरज की किरणें जब उसके सूट पर पड़ रही थीं, तो उसका सूट कुछ पर्पल कलर का लग रहा था, जो उस पर बहुत अच्छा लग रहा था। ये देखकर रवि ने बोला—

कभी पर्पल कलर ट्राय करना, तुम पर अच्छा लगेगा।

ये सुबह-सुबह कलर कहाँ से याद आ गया?

अरे ऐसे ही।

लाओ कैमरा दो, मैं फोटो ले लूँ, परफेक्ट शॉट है।

मुस्कान ने रवि को कैमरा दिया, और रवि ने मुस्कान की और उगते सूरज की 3-4 फोटो ली।

फिर मुस्कान ने रवि से कैमरा लेकर कुछ गाँव के बच्चे, चाय की टपरी और रास्ते की रैंडम पिक्स लीं। मुस्कान को एस्थेटिक और यूनिक फोटो लेना बहुत पसंद था।

इतने में रवि चाय ले आया—लो मैडम, असली चाय, गाँव वाली असली चाय।

मुस्कान ने चाय का पहला सिप लेते ही एक गहरी साँस ली, जैसे चाय बहुत अच्छी हो और उसे आनंद मिला हो।

अरे वाह, ये तो सच में असली चाय है, बहुत स्वाद, चलो उत्तराखंड का फाइनली मुझे कुछ तो अच्छा लगा।

कुछ तो? मतलब आपको मैं अच्छा नहीं लगता?

तुम और अच्छे? दिमाग ठीक है ना? तुम बिल्कुल मेरे टाइप के नहीं हो, पता तो है तुम्हें सब।

हाँ लेकिन ऐसे कौन मुँह पर बोलता है, और एट लीस्ट गाँव में तो मेरी तारीफ कर दो, कोई सुनेगा तो क्या कहेगा।

कोई? कौन कोई? उत्तराखंड के नैनीताल के एक एरिया में तुम्हारा गाँव है, तुम कोई यहाँ के सीएम नहीं कि सब जानते हैं और पूरा उत्तराखंड नाराज़ हो जाएगा तुम्हारी बुराई सुनकर।

ओहो, तुम्हें तो कुछ कहना और ज्ञान लेना है।

सॉरी मैडम, आप दिल खोल के बुराई करो, बस मेरे घर पे मत करना, वो क्या है ना मेरी मम्मी को मैं बहुत सुंदर और सुशील लगता हूँ, उनके आगे बस ऐसा कुछ मत बोलना।

ठीक है, अब तुम होने वाले दूल्हे हो, जाओ बख्शा तुम्हें।

इतने में भैया ने बस को थपथपाया और सबको अंदर आने के लिए सीटी बजाते हुए इशारा किया।

सब फटाफट बस के अंदर आ गए और ड्राइवर ने बस स्टार्ट की।

सुबह के करीब 8 बजे बस नैनीताल के झील के किनारे वाले बस स्टैंड पर पहुँची।

वहाँ गांधी जी की एक मूर्ति थी, उससे थोड़ा आगे एक रेहड़ी में चाय और ब्रेड ऑमलेट मिल रहा था।

मुस्कान ने उतरते ही बोला—भूख लगी है, ऑमलेट और चाय ले लें क्या? कितनी और दूर है घर यहाँ से?

अभी तो एक टैक्सी लेनी पड़ेगी घर के लिए, मेरा घर यहाँ से कुछ 80 किमी दूर है, मान लो ढाई घंटे और। आराम से वॉशरूम जाओ, फ्रेश हो लो, तब तक मैं ऑर्डर दे देता हूँ।

मुस्कान वॉशरूम गई, जब तक रवि ने 2 ऑमलेट और 2 चाय का ऑर्डर दिया। जैसे ही मुस्कान आई, फिर रवि भी वॉशरूम चला गया।

रवि जब वॉशरूम से आया तो ऐसा लग रहा था जैसे नहा के आया हो।

तुम नहा लिए क्या यहीं पे?

अरे नहीं, मम्मी को मैं गंदा-सांदा बिल्कुल पसंद नहीं, तो टैक्सी लेने से पहले मैं यहाँ हाथ-मुँह धोकर फिर आगे एक टपरी में चाय पीने जाता हूँ, वहीं बन-मक्खन भी मिलता है, वो खाता हूँ फिर घर जाता हूँ।

अरे तो पहले बताना था, वहीं चलते, दूर है क्या वो जगह?

हाँ, इस रोड के दूसरे किनारे पर, कुछ 1.5 किमी।

तो चलो फिर।

अरे नहीं, अब यहीं खा लेते हैं, तुम्हें ऑमलेट खाना है, वहाँ नहीं मिलेगा।

अरे मैंने तो ऐसे ही ऑमलेट बोल दिया।

कोई नहीं, अभी खा लो, जब घूमने आएँगे तो मैं ले चलूँगा वहाँ।

ठीक है।

इतने में अंकल ने ऑमलेट और चाय दे दी।

दोनों ने चाय पी, ऑमलेट खाया और टैक्सी में बैठ गए।

पहाड़ों के घुमाव छोटे-छोटे थे और ठंड जबरदस्त। यूँ तो टैक्सी में 4 सवारी बैठती है, पर आज सिर्फ रवि और मुस्कान ही थे, तो दोनों विंडो सीट पर बैठकर सुबह की ठंडी हवा का आनंद ले रहे थे।

हवा जैसे ही जोर से रवि के मुँह पर पड़ती, रवि के चेहरे पर एकदम से स्माइल आ जाती।

ड्राइवर ये सब शीशे से देख रहा था।

ड्राइवर ने पूछा— भाई जी, आप यहीं के हो ना?

हाँ भाई जी, मैं यहीं का हूँ, घर जा रहा हूँ।

हम्म, जिस तरह आप इस हवा को महसूस कर रहे हो, मुझे लगा ही था कि आप टूरिस्ट नहीं, लोकल हो।

मुस्कान जोर से हँसी और बोली—वो तो भैया ये शक्ल से भी लगता है कि पहाड़ी है।

हाँ बहन जी, लेकिन जरूरी नहीं कि हर पहाड़ी उत्तराखंड से हो, हिमाचल से भी तो हो सकता है।

सही बात भाई जी, अब इन मैडम को कौन बताए, इनके लिए तो हम सब हिमाचली, कुमाऊँनी, गढ़वाली सब एक ही हैं।

ठीक है समझ गई, ज्यादा ज्ञान मत दो।

इतने में टैक्सी पहाड़ के ऊपरी हिस्से में थी और वहाँ से नैना झील का मैंगो शेप वाला रूप दिख रहा था, जो कि एक टूरिस्ट पॉइंट भी है।

मुस्कान ने एक्साइटमेंट में बोला—अरे ये वही है ना मैंगो रिवर?

हाँ, तुम्हें देखना है?

नहीं, जब घूमने आएँगे तब देखेंगे, बस पहले जब आई थी तो तब का याद आ गया।

रवि ने हल्की हुई स्माइल के साथ बोला—ये कहने को बस एक झील है, पर इसके कई रूप, कई नाम और कई कहानियाँ हैं, यहाँ मैंगो, नीचे कुछ और… पर मेरे लिए ये मेरा वजूद है…

रवि की ऐसी बातें सुनकर मुस्कान हैरान थी, उसे नहीं पता था रवि ऐसी बातें भी करता है।

उसने रवि को टोका नहीं, बस उसको देखे जा रही थी और उसके कहे हर शब्द को सुन रही थी।

नैना झील के किनारे घूमना, वहाँ चाय पीना, वहाँ रात को बैठना, वहाँ गाने सुनना—ये सब मुझे बहुत पसंद है।

मुस्कान, अगर कभी तुम्हें मुझसे मिलना हो, तो नैना झील के किनारे सटे हुए मॉल रोड पर मिलना |

रवि ऐसे बोल रहा था जैसे वो बहुत बड़ा फिलॉसफर हो, और मुस्कान ऐसे सुन रही थी जैसे दुनिया में बस अब वही दो लोग बचे हों।

रवि रास्ते में जाते हुए अपने बचपन की बातें, स्कूल और दुकान और न जाने क्या-क्या दिखा रहा था।

मुस्कान बस चुपचाप सब देख रही थी और रवि को समझ रही थी, मानो पिछले दो साल में वो रवि से ऐसे मिली ही नहीं, ये पहली बार हो कि वो रवि से मिली हो।

रवि बहुत खुश था।

जब भी कोई इंसान अपने घर से बहुत दूर पढ़ने या कमाने जाता है, तो वो सिर्फ अपना परिवार ही नहीं, अपना शहर, अपनी दुकानें, अपने नुक्कड़, अपने दोस्त, अपने रिश्तेदार, अपने रास्ते सब छोड़ के आता है, और उसे वापस उन सबको पाने में सदियाँ लग जाती हैं...

ये सब बातें करते-करते रवि का घर भी आ गया, ये ढाई घंटा कैसे बीता पता ही नहीं चला। मुस्कान के लिए ये अब तक का सबसे अच्छा समय था, क्योंकि पहली बार वो उस इंसान के बारे में सब जान रही थी, जिसे वो बहुत प्यार करती है।

टैक्सी रुकी, रवि ने पैसे दिए, और वो दोनों उतरकर बायीं तरफ के पहाड़ पर चढ़ने लगे।

यहाँ थोड़ा चलना पड़ेगा, मेरा घर थोड़ा ऊपर है।

अच्छा, मुझे लगा सड़क किनारे ही होगा।

नहीं मुस्कान, थोड़ी मेहनत लगती है घर वापस आने में।

कोई बात नहीं, कर लेंगे मेहनत तुम्हें तुम्हारे घर ले जाने में।

रवि ने पलटकर मुस्कान को देखा और बोला—वेलकम टू माय होम।

इतने में ऊपर से एक बच्चे की आवाज आई—ताई जी, भैया आ गए, भैया आ गए!

बस घर में जैसे सबने भागना शुरू किया और गेट पर आकर इकट्ठा हो गए।

रवि की मम्मी हाथ में पूजा की थाली लेकर आई थीं, उन्होंने रवि की नजर उतारी, टीका किया और उसे अंदर लिया…

मुस्कान को एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे वो शादी करके आई है और उसका बहू के रूप में गृह प्रवेश हो रहा है… पर उसका ये भ्रम एकदम टूट गया, जैसे ही रवि की मम्मी सिर्फ रवि की आरती करके उसे गले से लगाया।

अरे मेरा बेटा, कैसा है रे तू, कितना कमजोर हो गया…

चल आ अंदर आ, थक गया होगा, मैंने चाय चढ़ा दी है, बस तेरे फेवरेट आलू पराठे बना रही हूँ, तू हाथ-मुँह धो ले।

इतने में रवि ने अपनी मम्मी और बाकी सबके पैर छुए और सबका हाल लिया और बोला—मम्मी ये मुस्कान है, मेरे ऑफिस से।

अरे हाँ बेटा, सॉरी रवि के चक्कर में मैंने ध्यान नहीं दिया।

कोई बात नहीं आंटी जी, रवि आया भी तो इतने दिन बाद है और वो भी इतने अच्छे मुबारक दिन पर…

ऐसा कहते हुए मुस्कान ने आंटी के पैर छूने के लिए खुद को झुकाया, इतने में आंटी ने मुस्कान को पकड़कर रोका और बोलीं—

हमारे यहाँ बेटियाँ पैर नहीं छूती… और आंटी ने उसे गले लगा लिया।

थैंक यू बेटा आने के लिए, इसे अपना ही घर समझना, कुछ भी चाहिए हो तो बताना, सिर्फ रवि को नहीं, किसी को भी बता सकती हो तुम।

फिर रवि की मम्मी सबको अंदर ले गईं।

रवि ने 5 पराठे खाए, मुस्कान हैरान थी, 3 पराठों पर रुक जाने वाला कैसे धड़ाधड़ खा रहा था।

मुस्कान ने बस 2 पराठों में ही बस कर दी और चाय पीने लगी।

आँखों आँखों में इशारा

आज यहाँ बहुत हड़बड़ी थी, पहले ही 12 बज चुके थे, 4 बजे तक लड़की वालों के घर जाना था सगाई के लिए।

रवि की मम्मी एक टांग पर इधर-उधर भाग रही थीं और जोर-जोर से चिल्ला रही थीं—

सब तैयार क्यों नहीं हो रहे, 2 बजे निकलना है, लेट हो जाएँगे, हे भगवान, यहाँ कोई सुनता ही नहीं, सुबह से उठा रखा है सबको, फिर भी देखो अभी तक सब तैयार नहीं हैं।

मम्मी सब हो जाएगा, पहले आप तैयार हो जाओ, मैं देख लूँगा, तुम जाओ।

तुम क्या देखोगे, तुम तैयार हो पहले, तुम्हारा कोट-पैंट मैंने निकाल के अलमारी के हैंडल पर टांग दिया है, तुम पहले तैयार हो जाओ।

हाँ मेरी माँ, हो जाऊँगा, तुम टेंशन मत लो।

अरे कैसे नहीं लूँ टेंशन।

इतने में मुस्कान आई और रवि की मम्मी के दोनों कंधे पकड़कर बोली—आंटी मुझे बताओ, क्या-क्या करना है, मैं सब कर दूँगी, पैकिंग, आपको तैयार, रवि को तैयार, घर का काम, कुछ भी बताओ आप।

रवि की मम्मी ने मुस्कान को प्यार से देखा और बोलीं—थैंक यू बेटा, तुम इसे बस तैयार होने भेज दो, खुद तैयार हो जाओ, और टाइम लगे तो ये सारा सामान जो आँगन में रखा है, इसे गाड़ी में रखवा देना, अंकल को सब पता है, पर मेरे बिना कोई कुछ करेगा नहीं।

आप टेंशन मत लो आंटी, आप आराम से तैयार हो जाओ, देखो सब कैसे झट से होता है।

फिर सब तैयार होने लगे। रवि ने डार्क ग्रे कलर का सूट पहना है और बहुत ही प्यारा लग रहा है।

रवि की मम्मी, भाई-बहन, पापा सब तैयार हो गए हैं। मुस्कान ने भी पिंक कलर का सूट पहना है। बाकी कुछ रिश्तेदार जो साथ जाएँगे, वो भी बिलकुल तैयार हैं।

मुस्कान ने रवि के पापा और भाई-बहन के साथ मिलकर सगाई का सारा सामान, मिठाई का थाल, फलों का टोकरा सब गाड़ी में रख दिया।

रवि की मम्मी ये देखकर बहुत खुश हैं कि सब टाइम पर हो गया है और अभी तक कोई लड़ाई नहीं हुई।

सब जल्दी-जल्दी गाड़ियों में बैठने लगे। रवि के पापा गाड़ी चलाएँगे, उनके बगल में रवि बैठ गया, और उसकी मम्मी और भाई-बहन पीछे, पर मुस्कान नीचे रह गई।

रवि तुरंत उतरा और अपने भाई को दूसरी गाड़ी में आने को कहा और मुस्कान को उसकी जगह बैठने को बोला।

मुस्कान गाड़ी में बैठ गई। मुस्कान ने रवि की मम्मी से बोला—

आंटी आप बहुत अच्छे लग रहे हो, और ये ऑरेंज कलर बहुत सूट कर रहा है आप पर।

थैंक यू बेटा, ये साड़ी रवि लाया था दिल्ली से, तभी से संभाल के रखी थी कि रवि की सगाई में पहनूँगी।

अच्छा, मुझे नहीं पता था रवि की पसंद इतनी अच्छी है।

रवि ने मुँह पीछे करके मुस्कान को देखा, सर हिलाया और बोला—सही है बेटा।

रास्ते भर रवि की मम्मी कुछ न कुछ याद ही कर रही थीं—ये करना है, ये देना है, ये मुझे याद दिला देना वगैरह-वगैरह।

कुछ 50 मिनट में वो लोग प्रीति के घर पहुँच गए।

वहाँ पहुँचते ही सारी दुनिया जैसे बदल गई। रवि को एक अलग कमरे में ले गए, मानो रवि अभी से जैसे उसका नहीं रहा हो, वो प्रीति का हो गया हो।

रवि की सेवा में सब लग गए। सब या तो रवि को घूर-घूर के देख रहे थे, या उससे बात कर रहे थे, या उसे कुछ खाने-पीने को दे रहे थे।

मुस्कान एकदम जैसे अकेली हो गई। उसे लगा जैसे उसका रवि अब उसका नहीं है, वो अब उसे कभी नहीं मिलेगा। एकदम से उसके और रवि के बीच में पूरा नैनीताल या यूँ कहूँ पूरी दुनिया आ गई थी।

मुस्कान ने चुपके से रवि की बहन के साथ एक कोने में बैठना सही समझा।

सगाई अपने पूरे रीति-रिवाज से हुई, फोटो भी खिंची, सब अपने हिसाब से सही चल रहा था। रवि की पूरी फैमिली बहुत खुश थी। रवि पूरे टाइम बस स्माइल कर रहा था।

पर मुस्कान का पूरा ध्यान सिर्फ और सिर्फ प्रीति पर था—ये कितनी सुंदर है, ये कितनी गोरी है, कितनी स्लिम भी है ये, इसकी साड़ी कितनी अच्छी है, इसका आईलाइनर, बिंदी, लिपस्टिक सब कितना अच्छा है, कितना परफेक्ट… ये बिल्कुल परफेक्ट है रवि के लिए, दोनों कितने अच्छे लग रहे हैं साथ में… मैं शायद कभी इतनी अच्छी नहीं लगती।

मुस्कान बस यही सब सोचकर प्रीति को देखे जा रही थी।

अंदर से वो बहुत उदास थी, पर बाहर से बहुत खुश होने की एक्टिंग कर रही थी। इस दौरान एक बार भी रवि ने मुस्कान की तरफ नहीं देखा। वो अपनी सगाई में इतना बिजी था, मानो वो भूल गया था कि मुस्कान भी दिल्ली से उसके साथ नैनीताल उसकी सगाई के लिए आई थी।

मुस्कान को इस बात का जरा भी बुरा नहीं लगा। आखिर ये रवि का बहुत खास दिन है, फिर वो क्यों उस पर ध्यान देगा, और वो भी तब जब उसकी होने वाली वाइफ उसके साथ हो।

सबने फोटो खिंचवाई, खाना खाया, डांस किया और सगाई पूरी हुई।

उसके बाद सब घर जाने के लिए गाड़ियों में बैठ रहे थे। इतने में मुस्कान ने देखा—प्रीति रवि को कमरे की खिड़की से देख रही थी और इशारों में कुछ बोल रही थी… और रवि भी मुस्कुरा रहा था…

अभी तक पूरी सगाई में जो भी हुआ, मुस्कान को एक बार भी बुरा नहीं लगा, लेकिन उन दोनों की ये आँखों-आँखों में इशारे वाली बात देखकर मानो वो अंदर तक जल गई हो, जैसे उसका पूरा शरीर गर्म हो गया हो जलन से।

उसे इतना गुस्सा आया कि कैसे कोई भी रैंडम लड़की उसके रवि से ऐसे इशारों में बात कर सकती है, और क्यों रवि उसे इतनी स्माइल से इशारे कर रहा है… ये पल मुस्कान के लिए उसकी जिंदगी का आज तक का सबसे दर्द भरा पल था।

वापस आते वक्त सब वैसे ही बैठे जैसे पहले बैठे थे। सब बहुत खुश और बहुत थके हुए थे। सब आपस में सगाई की बातें कर रहे थे, प्रीति की सुंदरता की तारीफ कर रहे थे, अरेंजमेंट और खाने के स्वाद की बात कर रहे थे… पर मुस्कान एकदम चुप थी।

तभी रवि ने बोला—

क्या हुआ मुस्कान, कैसी लगी गाँव की सगाई, सिंपल, सोबर… तुमने एंजॉय तो किया ना… और खाना कैसा लगा तुम्हें?

पता है मम्मी, मुस्कान बहुत चूज़ी है, वो चाय भी हर जगह की नहीं पीती।

अच्छा रवि… बताओ ना मुस्कान बेटा, खाना अच्छा था ना, गाँव में थोड़ा अरेंजमेंट कम होता है, तुम्हें कोई परेशानी तो नहीं हुई ना बेटी, तुम इतनी चुप क्यों हो?

नहीं-नहीं आंटी, सब बहुत अच्छा था, मैंने तो बहुत खाया, और पहाड़ी दाल तो 2 बार खाई… बस थक थक गई हूँ शायद… और आपकी बहू बहुत सुंदर है आंटी, रवि और प्रीति एकदम मस्त लग रहे थे साथ में, घर जाकर नजर उतार लेना आप रवि की…

ऐसा कहकर मुस्कान ने सबका दिल जीत लिया।

पर रवि को मुस्कान ठीक नहीं लग रही थी। ये पहली बार था जब मुस्कान ने रवि की तारीफ की हो… रवि ने तब कुछ नहीं कहा।

सब थोड़ी ही देर में घर पहुँचे और थोड़ी देर सामान समेटकर सोने चले गए। फरवरी की सर्दी की रात पहाड़ों पर बहुत ठंडी होती है।

रवि अपनी बहन के रूम में गया और मुस्कान से बोला—

तुम क्या यहाँ सोने आई हो… आओ तुम्हें अपनी छत दिखाऊँ… और सर्दी में तारे एकदम साफ दिखते हैं यहाँ… आओ

पूरे दिन भीड़ में घिरे हुए रवि को देखकर मुस्कान इतनी परेशान थी कि रवि के साथ अकेले समय बिताने की बात से वो झट से मान गई और अपनी जैकेट लेने लगी।

चलो देखें तुम्हारी छत और ठंड।

रवि की बहन बोली—मुस्कान दी, सो जाओ, भैया तो पागल है, अभी नई-नई सगाई हुई है तो दिमाग हिल गया है, आप इतना थक गए हो, सो जाओ, कल देख लेना।

क्यों कल देखेगी, तुम सोओ आराम से, ये आज ही देखेगी।

रवि और मुस्कान दोनों छत पर चलने लगे।

रवि की मम्मी ने दोनों को ऊपर जाते देखा और बोलीं—कहाँ जा रहे हो, सो जाओ, थक नहीं गए तुम लोग?

नहीं आंटी, रवि को अपनी छत से तारे दिखाने हैं, और फिर मैं बार-बार थोड़ी ही आऊँगी, तो सोचा देख लूँ।

तुम आजकल के बच्चे… ठीक है, जो करना है करो, बस ये गरम पानी और अंगीठी ले जाओ, और 10 मिनट से ज्यादा मत रुकना, वरना बर्फ हो जाओगे…

ऐसा बड़बड़ाते हुए रवि की मम्मी कमरे में चली गईं।

चाँद और सितारे

छत पे बहुत ठंड थी। रवि ने अंगीठी जलाई और दोनों उसके पास बैठ गए। मुस्कान ने जैकेट पहनी थी और रवि शॉल लेकर आया था… उसने मुस्कान से पूछा—

शॉल लेनी हो तो बताना।

अभी तो ठीक है, ज़रूरत होगी तो बताऊँगी।

तो दिखाओ, कहाँ हैं तुम्हारे फेवरेट चाँद-सितारे?

अरे, चाँद-सितारे तो बहाना था… बस मैं थोड़ी देर तुम्हारे साथ यहाँ बैठना चाहता था। पूरे दिन हँस-हँस के थक गया। दूल्हा होना भी कितना मुश्किल है, आज पता चला। ऊपर से इतनी बर्फी खिला रहे थे कि मैं शायद अब एक साल तक बर्फी ना खाऊँ।

अच्छा, तो तुम रिलैक्स होने आए हो?

हाँ… और तुम्हें क्या हुआ आज? तुम इतनी शांत क्यों थी? वैसे तो ऑल इंडिया रेडियो जैसी हो… लेकिन आज क्या हुआ, पूरे दिन चुप? गाड़ी में भी चुप।

पूरे दिन? तुम्हें कैसे पता? तुम तो इतने बिज़ी थे दूल्हा बनने में… तुमने कब देखा मुझे?

बिज़ी तो था, पर इतना भी नहीं कि भूल जाऊँ किसी को… दिल्ली से अपने गाँव लाया हूँ, अनजान शहर में, नए लोगों के बीच।

अच्छा जी!

मुझे लगा तुम तो बस प्रीति पे फोकस कर रहे थे…

हम्म… वो तो करना ही था, लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि अपने दोस्त को भूल जाऊँ।

ओह… दोस्त, हाँ।

क्यों, कोई शक है क्या?

नहीं-नहीं, कोई शक नहीं।

उस वक्त मानो मुस्कान आज का दिन, सगाई, प्रीति—सब भूल गई हो। बस उसे याद था कि वो रवि के साथ, उसके घर की छत पर अकेले बैठी उससे बात कर रही है… उसके लिए इतना ही काफी था…

शक होना भी नहीं चाहिए… अच्छा, वैसे तुम्हें कैसा लगा मेरा गाँव और सब?

गाँव बहुत अच्छा है… साफ और सुंदर है। और तुम्हारी फैमिली भी बहुत अच्छी है। लगा ही नहीं कि पहली बार मिली हूँ… सब बहुत अच्छे हैं।

हम्म… वो भी सब खुश हैं तुम्हारे साथ… वैसे एक बात बोलूँ?

हाँ, बोलो ना।

थैंक यू फॉर कमिंग!

थैंक यू फॉर इनवाइटिंग… और मुझे साथ लाने के लिए।

दोनों थोड़ी देर तक छत पर बैठे रहे और रवि अपने पुराने किस्से और छत की बातें बताता रहा। मुस्कान इस पल बहुत खुश थी। उसने रवि को ऐसा पहले कभी नहीं देखा था—जैसा उसने उसे नैनीताल में देखा, उसके घर में, उसके गाँव में… और अब उसे इस रवि से और प्यार हो गया था। ये जानते हुए भी कि वो अब किसी और का है… और आज ही उसकी सगाई हुई है।

थोड़ी देर बाद ठंड और बढ़ गई और अंगीठी ठंडी हो गई। रवि ने मुस्कान से पूछा—

अब नीचे चलें? थोड़ा सो लेते हैं... फिर कल घूमने चलेंगे। सुबह 12 बजे निकलते हैं।

ठीक है... मैं तब तक रेडी हो जाऊँगी।

उसके बाद दोनों अपने-अपने कमरे में सोने चले गए।

गोलू देवता का मंदिर और मैगी

अगले दिन सुबह उठकर दोनों ने नाश्ता किया, फिर दोनों तैयार होकर घूमने निकल गए।

रवि ने पापा की कार ले ली थी… वो खुद ड्राइव करना चाहता था। उसे मुस्कान को अपनी पुरानी यादें और जगहें दिखानी थीं।

पापा से चाबी लेते हुए उसने मम्मी से कहा—

7 बजे तक आ जाएंगे, और आज चिकन बना लेना… मुस्कान को चिकन और चावल बहुत पसंद है।

ठीक है, मैं चिकन बना लूंगी… टाइम से आना।

फिर दोनों कार में बैठ गए…

तो आज कहाँ ले जा रहे हो? गाँव का कौन सा हिस्सा दिखाओगे?

आज हम पहले चलेंगे गोलू देवता के मंदिर… वो हमारे कुल देवता हैं।

अच्छा, और फिर?

फिर टी एस्टेट, केव गार्डन … और आसपास कुछ मंदिर हैं। फिर लंच मॉल रोड पर करेंगे।

ठीक है… तुम थक नहीं जाओगे इतना ड्राइव करके?

अरे नहीं-नहीं, सब पास ही है। तुम टेंशन मत लो… और वैसे भी ये मेरा एरिया है, यहाँ मैं थक नहीं सकता।

अच्छा जी, क्या बात है!

और क्या... और फिर तुम हो ना, जब थकूंगा तो तुम चला लेना कार।

ना जी ना, पहाड़ों पर मैं कार नहीं चला सकती... तुम ही चलाओ। और अगर थक गए तो कहीं रुक के चाय पी लेंगे।

ओके मैडम... जैसे आप कहें।

थोड़ी देर में दोनों गोलू देवता के मंदिर पहुँच गए। रास्ते में रवि ने मुस्कान को अपनी बहुत सी पुरानी जगहें दिखाईं और किस्से सुनाए... रास्ता ऐसे कट गया जैसे पलक झपकते ही पहुँच गए हों।

रवि ने कार पार्क की और दोनों प्रसाद लेने लगे।

गोलू देवता का मंदिर बहुत प्राचीन मंदिर है। लोग यहाँ मन्नत के लिए घंटी बांधते हैं... और यहाँ इतने बंदर हैं कि प्रसाद चढ़ाने से पहले ही वो छीनकर भाग जाते हैं। चश्मा, टोपी—जो भी आसानी से उठा सकें, सब ले जाते हैं।

रवि ने मुस्कान को उसके गॉगल्स गाड़ी में रखने को कहा—

गॉगल्स रख दो।

क्यों? यहाँ अलाउड नहीं है क्या?

अरे बंदर ले जाएंगे तुम्हारे चश्मे... फिर मुझे मत कहना।

अच्छा! बंदर यहाँ?

बंदर? बंदरों की पूरी फौज है! कहो तो राम सेतु बना दें 5 मिनट में इतने बंदर हैं!

ये सुनते ही मुस्कान ने अपना चश्मा तुरंत गाड़ी की आगे वाली सीट पर रख दिया।

फिर दोनों ने दर्शन किए, फोटो क्लिक की।

दर्शन करने के बाद दोनों पार्किंग आए... वहीं बगल में एक छोटा सा.. टी स्टॉल था—“गोलू टी स्टॉल।”

मुस्कान ने उंगली से इशारा करते हुए कहा “मैगी खाएँ?”

रवि ने जाकर मैगी और चाय का ऑर्डर दिया।

क्या मैं यहाँ मैगी बना सकती हूँ? मुस्कान ने दुकान वाले भैया से पूछा।

अरे मैडम, आप क्यों बनाएंगी? आप खाइए... बनाना तो मेरा काम है।

प्लीज़ भैया, मुझे बनाने दो... मुझे आपकी दुकान बहुत अच्छी लगी... प्लीज़ प्लीज़!

मुस्कान एक बच्चे की तरह ज़िद करने लगी।

रवि ने दुकानदार को 100 रुपये दिए और बोला—

भाई जी, बनाने दो... दिल्ली से आई है, इसके लिए ये सब नया है।

मुस्कान ने अनजान बनते हुए कहा—

हाँ भैया, मैं दिल्ली से आई हूँ... पहली बार गाँव देखा है, प्लीज़!

दुकान वाले ने मुस्कान को कड़छी दे दी—

लो मैडम, बना लो।

मुस्कान ने बड़ी एक्साइटमेंट के साथ मैगी बनाई। रवि ने उसकी एक फोटो भी क्लिक की... फोटो में ऐसा लग रहा था जैसे वो चाय की दुकान मुस्कान की ही हो।

फिर दोनों ने मैगी खाई, चाय पी।

मैगी तो बहुत टेस्टी है... तुम जॉब छोड़ो और यहाँ टपरी खोल लो!

अच्छा… और टपरी खोलनी ही है तो यहाँ क्यों… ऑफिस के पास खोल लूं… वहाँ ज़्यादा लोग आएंगे… और कोई नहीं आया तो तुम तो आ ही जाओगे।

हाँ, ये तो है।

पर मुझे तो फ्री में दोगी तुम, या मुझसे भी पैसे लोगी?

अरे फ्री में क्यों? घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या! मैं तो पैसे लूंगी… और कभी-कभी टिप भी ले लूंगी।

अच्छा! चाय की दुकान पे टिप? सही है… तुम तो जल्दी ही टाटा-बिरला बन जाओगी!

सही है… यही करूंगी!

दोनों ने चाय खत्म की, फिर टी एस्टेट और केव गार्डन देखा… वहाँ बहुत सारी फोटो क्लिक की। फिर रास्ते में कुछ मंदिरों में रुककर दर्शन करते हुए लगभग 3:30 बजे तक वो मॉल रोड पहुँचे।

अब तक दोनों को भूख लग रही थी। मुस्कान ने कहा—

कितना घुमाओगे… कुछ खिला भी दो, मुझे भूख लगी है!

हाँ, बस यहाँ एक बहुत अच्छा रेस्टोरेंट है… बस 5 मिनट और।

दोनों ने गवर्नमेंट पार्किंग में कार लगाई, फिर मॉल रोड के गांधी जी वाले स्टैच्यू के पास से रिक्शा लिया और मोती महल रेस्टोरेंट जाने लगे।

रास्ते में मुस्कान ने पूछा—

ये वही रोड है ना, नैना झील के किनारे… जहाँ तुम मिलोगे?

रवि ने उसे देखा और कहा –

हाँ, यहीं मिलूंगा… लेकिन अभी नहीं… रात को… जब शाम जा रही हो और रात आ रही हो… जब सब टूरिस्ट अपने होटल के कमरों में या घरों में जा रहे हो… जब ये मॉल रोड खाली हो रहा हो… तब मिलूंगा मैं।

अच्छा जी… फिर आज ही मिल लेते हैं मिस्टर रवि से।

आज तो नहीं… आज घर पर मम्मी को डिनर का बोलकर आया हूँ। 4:30 निकलेंगे तो 7 बजे तक घर पहुँचेंगे।

मुस्कान ने थोड़ा उदास होकर कहा –

ठीक है… मुझे लगा आज तो रवि से मिल ही लूंगी…

उसके बाद दोनों मोती महल गए और वहाँ लंच करने लगे।

अच्छा, वैसे तुम मिलना क्यों चाहती हो रवि से… रोज़ तो मिलती हो।

हाँ, रोज़ तो मिलती हूँ… लेकिन मुझे ये नैनीताल वाला रवि ज़्यादा अच्छा लगा… मैं उसे और मिलना चाहती हूँ।

नैनीताल हो या दिल्ली, हूँ तो मैं ही!

“हो तो तुम… पर तुम नहीं समझोगे।”

ठीक है… एक काम करते हैं। कल शाम की बस कैंसल करके परसों की कर लेते हैं… और कल रात मिलते हैं तुम्हारे रवि से।

ऐसा हो सकता है क्या?

बिल्कुल… बस घर पर नहीं बताएंगे, वरना वो कहेंगे—बाहर क्यों रुकना, घर आ जाना, डिनर साथ करेंगे वगैरह - वगैरह …

ठीक है… पर झूठ बोलना सही रहेगा? प्रीति को पता चला तो?”

प्रीति को कौन बताएगा? तुम?

बात तो सही है... ठीक है। लेकिन ऑफिस की छुट्टी तो परसों खत्म होने वाली है, उसका क्या करेंगे?

कुछ नहीं... बोल देना तबियत ठीक नहीं है, एक दिन और रेस्ट चाहिए।

दोनों ने पूरी प्लानिंग की... जैसे रवि कोई तीसरा इंसान हो, जिससे मिलने जाना है।

कभी-कभी ऐसी अजीब हरकतें करते रहना चाहिए... कभी-कभी बच्चा बन जाना चाहिए। इस भागती-दौड़ती ज़िंदगी में हम जीना कब भूल जाते हैं, ये हमें पता ही नहीं चलता...

तो जब भी अपने गाँव या घर जाओ... वो सब करो जो तुम्हें पसंद है...क्योंकि शहर बस काम करवाता है... सुकून नहीं देता।

नैना झील से सटा हुआ मॉल रोड

पिछली रात रवि की मम्मी ने बहुत टेस्टी चिकन बनाया था। मुस्कान को बहुत पसंद आया… और आज तो सब मिलकर छत पर भी गए थे।

ऊपर सबने बैठकर अंताक्षरी भी खेली, फिर गरम-गरम गुलाब जामुन खाकर सब सो गए।

अगली सुबह उठकर नाश्ता किया और वापसी की तैयारी शुरू हो गई।

रवि की मम्मी थोड़ी उदास थी "बेटा, बस आए ही थे कि अब जाने का टाइम हो गया… थोड़ी और छुट्टी ले लेते, इतनी भी क्या जल्दी है जाने की?"

अरे मम्मी, तुम दिल्ली आ ही रही हो शादी की तैयारी के लिए… फिर रहना मेरे साथ कुछ दिन। अभी तो जाना पड़ेगा… फिर शादी में भी छुट्टियाँ लेनी हैं।

हाँ ठीक है… मुझे मत समझाओ।

रवि ने माँ को गले लगाया और चुप कराया—

बस कुछ दिन और…

सबने मुस्कान को अच्छे से विदा किया। मुस्कान बहुत खुश थी सब से मिलकर। रवि की मम्मी ने मुस्कान को एक सूट और 251 रुपये का लिफाफा भी दिया और बोली—

बेटा, बहुत अच्छा लगा तुम आई। दिल्ली आऊंगी तो तुम भी चलना, तैयारी में मदद हो जाएगी… और शादी के टाइम 10 दिन पहले आ जाना, तुम हमारे तरीके सब अच्छे से समझ गई हो। … मदद कराना, ठीक है?

हाँ आंटी, बिल्कुल! इसमें भी कोई कहने की बात है? मैं आ जाऊंगी… आप चिंता मत करो। और दिल्ली का तो सब मुझ पर छोड़ दो… हम इस रवि को लेकर नहीं जाएंगे, इससे ज़्यादा मार्केट मुझे पता है। मैं ले चलूंगी आपको हर जगह… और आपको अपने मम्मी-पापा और भाई से भी मिलवाऊंगी।

ठीक है बेटा… बहुत अच्छा लगा तुमसे मिलकर। हमेशा खुश रहो।

इसके बाद दोनों टैक्सी में बैठे और मॉल रोड की तरफ जाने लगे।

नाश्ता इतना हेवी था कि लंच करने का मन नहीं था। तभी मुस्कान बोली—

अरे एक काम करते हैं… तुम्हारे बन-मक्खन वाले के पास चलते हैं, एक-एक चाय हो जाए… लंच के लिए तो पेट में बिल्कुल जगह नहीं है।

ठीक है, वहीं चलते हैं… पहले होटल में रूम ले लेते हैं, फिर सामान रखकर चलेंगे।

हाँ, लेकिन रूम झील किनारे लेना… प्लीज़।

ठीक है।

टैक्सी वाले ने ये सुनते ही तुरंत उन्हें “अशोका होटल” के बारे में बताया—

भाई जी, कहो तो वहाँ के मैनेजर को बोल दूँ… जानता है मुझे।

ठीक है भाई जी, फोन कर दो… झील किनारे है ना?

जी भाई जी, रूम से झील दिखती है… और पैदल ही आप नैना देवी मंदिर भी जा सकते हैं।

ठीक है भाई जी, कर लीजिए फोन।

उस टैक्सी वाले के पास टच फोन देखकर मुस्कान और रवि दोनों हैरान हो गए… सैमसंग का छोटा सा कूल फोन था, जिसमें कोई बटन नहीं था—सिर्फ टच से चलता था।

भैया ने बड़े स्टाइल से फोन किया और होटल वाले को एक रूम बुक करने को कहा।

इतने में रवि बोला—

भाई जी, हमें 2 रूम चाहिए… आस-पास।

ठीक है भाई जी, मैं दो पूछ लेता हूँ।

ड्राइवर ने उनके लिए दो रूम बुक किए और उन्हें होटल छोड़ दिया।

बोर्ड पर लिखा था—

"अशोक होटल – यहाँ वेज और नॉन-वेज दोनों भोजन मिलते हैं।"

होटल बिल्कुल मॉल रोड पर झील किनारे था।

दोनों ने चेक-इन किया, अपने-अपने कमरे में सामान रखा और फ्रेश होकर बन-मक्खन वाले के पास जाने के लिए निकल गए।

बन-मक्खन वाले का कोई स्टॉल नहीं था… बल्कि एक पुरानी सी साइकिल थी, जिस पर उसने अपना छोटा सा सेटअप बना रखा था… और वो उनके होटल से सिर्फ 2 मिनट की दूरी पर था।

दोनों ने वहाँ जाकर चाय पी और एक बन-मक्खन खाया।

चाय बहुत स्वादिष्ट थी… ऐसी चाय मुस्कान ने पहले कभी नहीं पी थी।

उसके एक्सप्रेशन देखकर रवि ने कहा—

क्यों मैडम, असली चाय है ना?

हाँ, एकदम असली! मैं तो एक और लूंगी… भैया, बहुत बढ़िया चाय है, मेरे लिए एक और बना दीजिए।

हाहाहा, तुम भी ना… कहाँ तो पेट फुल था और अब एक और! ड्रामा क्वीन।

क्या ड्रामा क्वीन… स्वाद की चीज़ छोड़नी नहीं चाहिए… और वैसे भी रूम में वॉशरूम है, तो क्या टेंशन!

छी! क्या यार, खाते वक्त कैसी बातें!

तो क्या हुआ, सही बात तो है!

दोनों जोर-जोर से हँसने लगे… चाय वाले भैया को भी हँसी आ गई।

चाय खत्म करके दोनों बोटिंग करने गए… उसके बाद नैना देवी मंदिर, गुरुद्वारा और स्पोर्ट्स ग्राउंड देखा… फिर मॉल रोड के किनारे घूमने लगे।

इतने में वो वक्त आ गया… जब शाम जाती है और रात आती है…

रवि ने मॉल रोड के किनारे की एक लिकर शॉप से वोडका की एक बोतल ले ली थी… जो मुस्कान को नहीं पता था।

दोनों फिर एक जगह पहुँचे जहाँ बहुत भीड़ थी… वो जगह झील के किनारे थी। वहाँ मॉल रोड का पूरा शोर आ रहा था… लेकिन अच्छी बात ये थी कि वहाँ से नैना झील और पूरा नैनीताल साफ दिखाई दे रहा था।

दोनों वहीं एक बेंच पर बैठ गए। रवि ने इशारे से मुस्कान को बताया—

इसमें वोडका है।

पागल हो क्या… सड़क पर…

रवि कोई ड्रिंकर नहीं था, लेकिन कभी-कभी ऑफिस पार्टी में पी लेता था। और मुस्कान ने अभी तक कभी नहीं पी थी… उसका मानना था कि पीने के

लिए एक सुकून भरी जगह और अच्छी कंपनी होना जरूरी है… और ये दोनों चीजें उसे आज तक नहीं मिली थीं।

थोड़ी देर में शाम धुंधली और गहरी होती चली गई… धीरे-धीरे लोग कम होने लगे… अब सिर्फ पानी और पंछियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी… मानो यह वह शहर ही नहीं है, जो एक घंटे पहले था।

रवि ने अपना पेग बनाया और मुस्कान से पूछा -

तुम्हारा बनाऊँ?

ना जी… मैं अपना पहला पेग किसी अच्छी जगह, सुकून से, अच्छी कंपनी के साथ पीना चाहती हूँ।

अच्छा जी… मेरी कंपनी तुम्हें पसंद नहीं?

ना

तो फिर क्यों आई हो दिल्ली से 325 किलोमीटर दूर मेरे साथ?

वो तो मैं तुम्हारी सगाई में तुम्हें हौसला देने आई थी।

अच्छा… तो अभी तक दिया क्यों नहीं हौसला?

हौसला कोई मूंगफली चने का पैकेट नहीं कि जेब से निकाला और दे दिया

मेरा तुम्हारे साथ आना ही सबसे बड़ा हौसला है… क्यों है ना

बात तो सही है… तुम्हारी, सच बोलूं तो शादी-वाडी के नाम से थोड़ा डर ही लगता है..

ऐसा क्यों, तुम्हें कौन सा ससुराल जाकर, सुबह उठकर खाना बनाना है…

ससुराल तो नहीं जाना, पर क्या पता बीवी आके खाना बनवा ले

तो दीदी है ना, उनसे बनवाना

हाँ बात तो सही है

हम्म…

तो Mr. Ravi और बताओ, वैसे जब से हम नैनीताल आए हैं, तुम्हारा अलग ही रूप देखा है मैंने…

अच्छा, ऐसा क्या, पर मैं तो वही हूँ

हाँ हो तो वही, पर तुम यहाँ ज्यादा खुश और अलग-अलग लग रहे हो…

अच्छा मैंने कभी ऐसे ध्यान नहीं दिया।

हम्म,

और बताओ, ये दारू यहीं पियोगे या रूम में जाकर

यहीं पियूंगा, और हाँ, मुझे याद दिला देना 4 पेग तक मैं ठीक हूँ, पाँचवां नहीं होना चाहिए, 5 के बाद मुझे कुछ याद नहीं रहता, और मैं सो जाता हूँ तो तुम्हें उठाकर ले जाना पड़ेगा…

अच्छा जी, ये कौन सी मैथ है… मुझे बेवकूफ समझा है क्या

अरे नहीं सच में, हर किसी की कैपेसिटी होती है, मेरी 4 पेग तक है…

अच्छा, मुझे ये सब नहीं पता था, थैंक फॉर द इंपोर्टेंट इंफॉर्मेशन… अच्छा वैसे मेरी कैपेसिटी कितनी होगी…

पीकर देख लो

ना रे बाबा… कहीं मैं जल्दी आउट हो गई तो, तुमने मेरा फायदा उठा लिया तो…

चिंता मत करो, अगर हम दोनों में से कोई फायदा उठा सकता है, तो वो तुम हो मैं नहीं… हम दोनों में शैतान तुम हो, मैं तो शरीफ हूँ

अच्छा, वाह… मैं इतनी खतरनाक हूँ क्या, ऐसा क्या किया मैंने तुम्हारे या किसी के साथ आज तक जो ऐसा इल्जाम..

अरे मजाक कर रहा हूँ, ज्यादा मत सोचो… पर सच भी है ये.. तुम इतनी बोल्ड मैं इतना भोंदू…

पियोगी तो बताओ, मैं अपना पेग बना रहा हूँ…

अरे मैंने कहा ना मुझे पहला पेग तसल्ली से सुकून से और बेस्ट कंपनी के साथ पीना है…

ठीक है, जैसे तुम कहो

ऐसा कहकर रवि ने अपना पहला पेग बनाया उसने वोडका में जूस मिलाया… जिसे देख के मुस्कान हँसी और बोली

ये क्या, जूस?

हाँ दारू अच्छी चीज नहीं है, तो उसे बैलेंस करने के लिए जूस मिलाया है ताकि बुरी चीज के साथ एक अच्छी चीज भी पेट में जाए

जब इतनी चिंता है पेट की तो बुरी चीज पी ही क्यों रहे हो

सच बताऊँ, वैसे तो मुझे ऑफिस पार्टी के अलावा कहीं भी पीना समझ नहीं आता, पर जब से तुमने कल से कहा है तुम्हें Ravi से मिलना है, तब से मैंने सोच लिया था, कि अब ढंग से मिलाते हैं, तुम्हें Mr. Ravi से… इसलिए मूड बना रहा हूँ

अच्छा, फिर तो और पियो, कहो तो मैं पिला दूँ

रवि बस बोले जा रहा था, नॉन-स्टॉप….।

ऐसा पहली बार हुआ था, कि जो मुस्कान बहुत बातूनी थी, वह अब कम बोल रही थी, और रवि ज्यादा…

जैसे जैसे रवि सिप ले रहा था, नैनीताल झील की आवाज और साफ सुनाई दे रही थी, लोगों की भीड़ कम हो रही थी, और अंधेरा धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था…

इतने में एक पुलिस वाले ने देखा कि वो लोग सड़क किनारे दारू पी रहे थे, तो उसने रवि से पूछा… रवि ने ग्लास दिखाते हुए बोला, सर, जूस है…

पुलिस वाले ने सिर हिलाया और चला गया

रवि और मुस्कान दोनों जोर से हँसे, कि लो अच्छी चीज ने आखिर बचा ही लिया…

4/5 पेग

मुस्कान बहुत रूल्स वाली थी, उसने रवि को बोला कि प्लीज़ यहाँ मत पियो, रूम में जाकर पी लेना…

रवि ने एक बार भी उसे टोका नहीं और सारा सामान उठाकर होटल की तरफ जाने लगा…

उनके रूम में बालकनी थी, और उस बालकनी से भी नैना झील और उसके साथ मॉल रोड पूरा दिख रहा था

वो दोनों रवि के रूम की बालकनी में छोटी टेबल लगाकर बैठ गए… उनका व्यू बहुत प्यारा था, वहाँ से कुछ पहाड़ और नैना झील साफ दिख रही थी…

रवि ने दूसरा पेग बनाया, और पेग बनाते-बनाते भी वो अपने पुराने किस्से, पहली बार जब उसने ड्रिंक की थी वो किस्सा, और अपने स्कूल के दोस्तों की उल्टी-सीधी बातें बता रहा था..

रवि ने पहले कभी किसी से इतनी बातें नहीं की थीं, वो अपनी बातें सबको नहीं बताता था, यूँ कहें उसे बताना पसंद नहीं था…

पर आज शायद वोडका का असर था, कि वो चुप ही नहीं हो रहा था…

दूसरा पेग खत्म हुआ और उसके बाद रवि ने अपने कुछ रिश्तेदारों के बारे में बताया, जो रवि की फैमिली और रवि से चिढ़ते थे… (अक्सर हम सबका एक ऐसा रिश्तेदार होता ही है, बस रवि उसी रिश्तेदार की बात बता रहा था)

रवि बता रहा था कि कैसे उसके चाचा ने उसके मम्मी-पापा को परेशान किया, और काफी प्रॉपर्टी का हिस्सा बर्बाद कर दिया, वरना आज रवि और भी बहुत अमीर होते..

जब तक दूसरा पेग आधा हुआ, अब रवि अपने कॉलेज और फर्स्ट जॉब की बात बताने लगा, धीरे-धीरे वो अपने और मुस्कान के ऑफिस लोगों की भी कुछ-कुछ बातें उसे बताने लगा,

इसमें से काफी बातें मुस्कान को पता थीं, पर वो ऐसे रिएक्ट कर रही थी, जैसे वो पहली बार सुन रही हो… पर कुछ-कुछ बातें ऐसी थीं, जो मुस्कान को पता नहीं थीं…

ऐसे करते-करते रवि का तीसरा पेग भी खत्म हो गया।

रवि ने अपना आखिरी पेग बनाया… और मुस्कान को बोला ये लास्ट, फिर सो जाना, मैंने आज बहुत बोर किया तुम्हें..

नहीं तो, मुझे तो अच्छा लग रहा है, मुझे अगर पहले पता होता कि नैनीताल में तुम इतना बोलते हो, तो पहले ही आ जाती तुम्हारे साथ…

रवि हँसने लगा… अच्छा जी, लगता है तुम्हारी संगत का असर हो गया जो इतना बोल रहा हूँ…

रवि बिल्कुल सेंस में था, उसे ज़रा भी नहीं चढ़ी थी, वो happily high था, वो सारी बातें बता रहा था मुस्कान को..

उसने जैसे ही अपने पेग की सिप मारी, इतने में उसका फोन बजा… स्क्रीन पर प्रीति लिखा था

रवि ने प्रीति का नाम देखा और उसके चेहरे पर स्माइल आ गई…

पर स्क्रीन पर लिखा नाम देखकर मुस्कान की सारी स्माइल चली गई…

अरे यार, इस टाइम क्यों फोन आया, मेरी आवाज़ से लग तो नहीं रहा ना कि मैंने पी है

वैसे तो नहीं लग रहा, और तुम्हें डाउट है तो मत उठाओ फोन, सुबह कर लेना

नहीं नहीं, उठाया नहीं तो बहुत सवाल होंगे…

अच्छा, अभी से सवाल-जवाब, अभी तो 2 दिन हुए हैं सगाई को

अरे तुम तो जानती हो लड़कियों को.. ये बोलते-बोलते रवि ने फोन उठाया और रूम में चला गया, और जाते वक्त उसने बालकनी का डोर बंद किया..

डोर कुछ इतना बंद था कि वो रवि का सिर्फ चेहरा देख पा रही थी, बाकी शरीर नहीं, वो बेड पर लेटकर प्रीति से बात करने लगा… मुस्कान को सब सुनाई दे रहा था, लेकिन हल्का-हल्का…

उधर वो दोनों फोन पर बात कर रहे थे…

हाँ मैंने खा लिया खाना, यहाँ नेटवर्क कम है.. शायद फोन कट जाए

.

.

.

हाँ तुम अच्छी लग रही थी, और तुमने जो परफ्यूम लगाया था वो भी अच्छा था…

बस इतना ही मुस्कान ने सुना और चेयर से उठकर बालकनी के दूसरे कोने में जाकर खड़ी हो गई, ताकि उसे रवि की बातें सुनाई ना दें

मुस्कान नैना झील पर टिमटिमाती लाइट को देखे जा रही थी, और उसे इस बार गुस्सा नहीं, रोना आ रहा था… उसने बहुत कोशिश की अपने आँसू रोकने की, पर इस बार उसका सब्र का बांध टूट गया, और सारे आँसू बह गए…

उधर रवि ने करीब 2-3 मिनट बात की, और मुस्कान 2-3 मिनट बस रो रही थी..

एकदम से रवि ने दरवाज़ा खोला… मुस्कान ने फटाफट से अपने आँसू पोंछे..

रवि ने लेकिन देख लिया… रवि ने अपनी लास्ट सिप एकदम से गटक ली और बोला, क्या हुआ, सब ठीक

हाँ सब ठीक, बस ऐसे ही कुछ याद आ गया

अरे तो बताओ ना ऐसा क्या याद आ गया कि रोना भी आ गया…

ऐसा कुछ नहीं है… तुम्हारी हो गई बात प्रीति से, वो ठीक है ना…

हाँ वो तो ठीक है, तुम लेकिन ठीक नहीं हो, इधर आओ और बैठो चेयर पर, और बताओ क्या हुआ

मुस्कान ने चेयर सरकाई और उस पर बैठ गई और बोली एक बात बोलूं मुझे जज तो नहीं करोगे ना

अरे पागल हो क्या, मैंने आज तक तुम्हें कभी जज किया है तो आज करूँगा… बोलो क्या बात है

मुझे ना… मुझे…

हाँ

मुझे दारू पीनी है

रवि जोर-जोर से हँसा… क्या तुम दारू पीने के लिए रो रही हो... अरे मैंने तुम्हें ऑफर की तो थी, क्या मुस्कान तुम इतनी बोल्ड होकर ऐसे रो रही हो दारू के लिए

रुको मैं बनाता हूँ तुम्हारा पेग….

रवि अंदर से दूसरा ग्लास लाया, और मुस्कान का पेग बनाया… मुस्कान का ये पहला पेग था, और रवि को याद था उसे अच्छी कंपनी चाहिए पीने के लिए, तो उसने अपना भी पेग बना लिया

जैसे ही उसने अपने ग्लास में वोडका डाली…

मुस्कान जोर से बोली, अरे ये तुम्हारा पाँचवां पेग होगा, जो तुमने नहीं पीना चाहिए…

रवि को अब तक थोड़ी-थोड़ी चढ़ चुकी थी.. उसने धीरे से बोला, मेरे दोस्त को पहला पेग मैं अकेले थोड़ी ही पीने दूँगा…

और उसने अपना ग्लास उठाया, और मुस्कान के साथ चीयर्स किया

मुस्कान ने एक सिप लेते ही बोला, ये तो नॉर्मल है, इसमें ऐसा क्या है, जूस का ज्यादा टेस्ट आ रहा है…

रवि हँसा.. हाँजी मैडम जूस ही है, आप पी लीजिए…

क्योंकि मुस्कान पहली बार पी रही थी, और उसे दारू और जूस में कोई फर्क नहीं समझ आया वो जल्दी-जल्दी पीने लगी..

अरे अरे… ट्रेन पकड़नी है क्या, फील करके पियो, ऐसे कौन पीता है… सच में जूस नहीं है, थोड़ा पियो… थोड़ा खाओ.. लो चिप्स खा लो, तुम्हारे फेवरेट हैं…

मुस्कान हँसी और बोली, चलो कुछ तो ऐसा है जो तुम मुझे सिखा सकते हो, वरना तो मैं ही तुम्हें सिखाती रहती हूँ

बात तो सही है… मैंने Ms. Muskan को सिखाया भी तो क्या… दारू पीना वाह.. एक परमवीर चक्र तो मुझे भी मिलना चाहिए

परमवीर चक्र मरणोपरांत मिलता है… और हम दोनों तो ज़िंदा हैं…

अब रवि को थोड़ी चढ़ चुकी है… उसकी आँखें थोड़ी मिच रही हैं और जुबान बहुत धीरे-धीरे शब्दों को बाहर निकाल रही है

मरणोपरांत… बात तो सही है… पर मैडम हम तो उसी दिन मर मिटे थे जब आपको पहली बार देखा था…

जैसे ही मुस्कान ने ये सुना… वह एकदम से हैरान हो गई.. उसे लगा कि यह कोई सपना है… मुस्कान रवि को ध्यान से देख रही थी…

मुझे आज भी याद है तुम्हारा पहला दिन, तुमने ब्राउन स्वेटर और ब्लैक ट्राउज़र पहना था, तब तुम्हारे पास व्हाइट कलर का हैंड बैग था और व्हाइट चप्पल पहनी थी …

(मुस्कान एकदम हैरान थी… सिर्फ 2 मिनट ही मिले थे जॉइनिंग वाले दिन, इसे इतना कैसे याद)

उसी दिन से मर मिटे थे हम तुम पे… और जब तुमने स्टाइल से मार्केटिंग बोला तो लगा लो आज जीवन सफल हो गया मार्केटिंग में और इस ऑफिस में आने का…

उस दिन से हर रोज़ मैं तुम पे मरने और तुम्हारे साथ जीने ही ऑफिस आता हूँ…

रवि ये सब बहुत धीरे-धीरे और नशे में बोल रहा था, उसे ये एहसास ही नहीं था कि वो क्या बोल रहा है… उसका पाँचवां पेग खत्म होने वाला था…

मुस्कान उसे बहुत हैरानी से देख रही थी, उसे यकीन ही नहीं हो रहा था जो वो सुन रही थी उस पर…

इतने में रवि ने अपनी आँखें खोली और फिर से बड़बड़ाने लगा…

पर तुम्हें तो मेरी शक्ल पसंद नहीं, मैं बंदर जैसा जो हूँ… कभी-कभी लगता है मैं क्यों गोरा हूँ… अगर मैं गोरा नहीं होता, तो शायद तुम मुझे पसंद करती… बाकी रही मेरी आवाज़, उसका मैं कुछ नहीं कर सकता पता नहीं तुम्हें क्यों नहीं अच्छी लगी, मुझे तो बहुत पसंद है मेरी आवाज़.. देखो मेरी भारी आवाज़ में तुम्हारा नाम कितना प्यारा लग रहा है…

मुस्कान… Ms. Muskan… मुस्कान मैडम… मेरी मुस्कान

और ये बोलकर, रवि हँसने लगा.... हँसते-हँसते उसकी आँखें गीली हो गई... और वो फिर बड़बड़ाने लगा

तुम्हें मैं क्यों पसंद नहीं हूँ... काश पसंद होता...

तुम्हें पता है मैं तुम्हें नैनीताल क्यों लाया....

रवि चुप हो गया

फिर जोर से बोला...

मैडम आप से पूछ रहा हूँ, पता है मैं तुम्हें नैनीताल क्यों लाया.. बताओ

सगाई के लिए (मुस्कान ने धीरे से कहा)

नहीं, मैं तुम्हारे साथ वो सब जीना चाहता था जो मैंने सोचा था कि उसके साथ जियूँगा जिससे प्यार करूँगा

मैं हमेशा से सबसे पहले उस इंसान को सब बताना या दिखाना चाहता था जिससे मुझे प्यार हो, इसलिए मैंने तुम्हें अपना पूरा गाँव दिखाया, स्कूल, हर नुक्कड़, दुकान, अपनी छत सब दिखाया... मैं गोलू देवता के मंदिर भी इसलिए ले गया था तुम्हें... और जब तुमने एक दिन और रुकने की बात की तो मैं......

बस ये बोलते ही रवि सो गया....

मुस्कान ने उसे हिलाया और बोला... तो मैं क्या... क्या रवि बताओ ना..

पर रवि अब सो चुका था...

मुस्कान और सुनना चाहती थी, वो सब सुनना चाहती थी...

थोड़ी देर मुस्कान वहीं बैठकर बस रवि को देख रही थी... और रो रही थी... कि उसने कभी रवि से बोला क्यों नहीं, और कभी कुछ पूछा क्यों नहीं...

और रवि भी आज ये सब बता रहा है, जब उसकी सगाई हो गई... काश उसने ये बात 3 दिन पहले बताई होती... तो बात कुछ और होती...

मुस्कान ये सोच के और रोने लगी…

कुछ 5 मिनट तक वो वहीं बैठी रही… अब ठंड बढ़ रही थी… रवि चेयर पर ही सो रहा था…

मुस्कान ने जैसे-तैसे कोशिश करके रवि को बेड पर लिटा दिया… उसकी चप्पल उतारी और उसे कंबल उढ़ा दिया…

और उसके पास बैठकर उसे बस देखे जा रही थी…

मुस्कान थोड़ी देर ऐसे रवि को देखने के बाद उठी और रवि के रूम की लाइट बंद करके अपने रूम में चली गई…

उसने अपना मुँह धोया, उसकी आँखें रो-रो के सूज चुकी थीं, उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे जिस बात पर खुश होना चाहिए वो उसी बात पर रो रही है…

जिस इंसान को वो 3 साल से इतना प्यार करती है…. वो इंसान भी उसे प्यार करता है, और उससे ज्यादा और उससे पहले से…

पर उसे ये सब दिखा क्यों नहीं…

वो भगवान से बार-बार सवाल कर रही थी… कि रवि ने पहले ये क्यों नहीं बताया सगाई के बाद ही क्यों….

और ऐसे ही सोचते-सोचते उसने पूरी रात छत को देखकर बिता दी, वो एक पल के लिए भी नहीं सोई…

कभी-कभी हम जो देखते हैं वो होता नहीं है… रवि को लगा था मुस्कान को वो पसंद नहीं… और मुस्कान को लगता था, रवि उसे बस दोस्त मानता है..

पर सच क्या है दोनों को ही नहीं पता था…

इसलिए हमें हर बात के हर पहलू को देखना चाहिए ताकि पछतावा न हो…

नई सुबह

मुस्कान अभी भी सिर्फ छत को देखकर सोच में डूबी थी, इतने में उसके दरवाज़े पर नॉक हुई… रवि ने बोला… मैं हूँ, उठ गई हो तो दरवाज़ा खोलो प्लीज़

अब मुस्कान को सब पता था, पर उसे समझ नहीं आ रहा था वो कैसे रिएक्ट करे…. रवि को देख के क्या बोलेगी… या रवि उसे देख के क्या बोलेगा

इतने में रवि ने फिर आवाज लगाई… सो रही हो क्या

मुस्कान ने उठकर दरवाज़ा खोला….

रवि के बाल बिखरे थे और वो बहुत परेशान था…

वो सीधा आया और बेड के साइड पर लगे हुए 2-सीटर सोफे पर लेट गया, और बोला, हे भगवान मैंने इतनी क्यों पी… मुस्कान प्लीज़ रिसेप्शन से डिस्प्रिन और नींबू पानी मंगवा दो.. मेरा सिर फट रहा है…

मुस्कान ने तुरंत रिसेप्शन से डिस्प्रिन और नींबू पानी मंगाया… और रवि को दे दिया..

रवि की शक्ल बिल्कुल लाल थी… उसने मुस्कान को बोला वो थोड़ी देर और सोएगा… और उसने पूछा

क्या मैं तुम्हारे बेड पर ही सो जाऊँ… चलने का मन नहीं है

हाँ बिल्कुल सो जाओ… आराम से,

ऐसा कहकर… मुस्कान ने उसे जगह दी और रवि लेट गया…

मुस्कान नहाने चली गई... उसे समझ नहीं आ रहा था वो रवि से क्या और कैसे बात करे... वो नहाई, तैयार हुई... उसने देखा रवि सो रहा था... उसने अपना पर्स उठाया और बिना रवि को डिस्टर्ब किए वो बाहर चली गई...

वो चल तो रही थी, पर दिमाग में यही चल रहा था कि रवि से क्या और कैसे बात करे... ऐसे सोचते-सोचते, रवि का फेवरेट बन-मक्खन वाला आ गया...

मुस्कान ने एक चाय ली और बन-मक्खन खाया... फिर वो नैना देवी के मंदिर गई...

जब हम बहुत विचलित होते हैं, तो कई बार हम किसी मंदिर, मस्जिद या किसी शांत जगह पर जाकर बैठते हैं और अपने सारे सवालों के जवाब ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं, और सब कुछ भगवान के हाथों में सौंपने के बाद थोड़ी देर आँखें बंद करके बैठने से एक अलग ही सुकून मिलता है...

मुस्कान ने थोड़ी देर वहाँ बैठकर अपने मन और दिमाग को शांत किया, और सब भगवान पर छोड़ दिया.... कि देखते हैं अब रवि क्या बोलता है...

और कुछ दो घंटे बाद... वापस होटल की तरफ आने लगी... वापस आते वक्त उसने रवि के लिए बन-मक्खन भी पैक करवा लिया...

उसने डोर नॉक किया... रवि ने दरवाज़ा खोला

रवि नहा चुका था और एकदम फ्रेश था...

कहाँ गई थी मैडम सुबह-सुबह

अरे वो चाय पीने और बन-मक्खन खाने

अकेले-अकेले गलत बात, वो मेरा फेवरेट है, भूल गई क्या आप

भूली नहीं इसलिए तुम्हारे लिए पैक करवा लिया

ये सही किया… मैं चाय ऑर्डर कर लेता हूँ, फिर खाऊँगा, भूख भी बहुत लग रही है…

रवि ने चाय ऑर्डर की और अपने रूम में अपना सामान पैक करने चला गया… 10 बज चुके थे और 11 बजे चेक आउट करना था

जैसे ही चाय आई… रवि ने मुस्कान को अपने ही रूम में बुला लिया.. दोनों उसी बालकनी में बैठकर चाय पी रहे थे… जहाँ कल रवि ने अपना सारा दिल खोल दिया था….

मुस्कान वेट कर रही थी, कि रवि कब कुछ बोले… पर रवि ने कुछ नहीं बोला…

फिर मुस्कान ने शुरुआत की…

रात को यही झील कितनी अलग लग रही थी, और अब देखो कितनी अलग लग रही है… बिल्कुल तुम्हारी तरह… रात को इतना बोल रहे थे, और अब एकदम शांत….

हाँ यार बोल तो मैं ज्यादा रहा था, उम्मीद है तुम्हें पकाया नहीं,

अरे नहीं नहीं बिल्कुल नहीं… तुमने कोई भी पकाने वाली बात नहीं बोली

चलो ठीक है… मैं सुबह उठ के सोच रहा था.. कॉलेज तक तो ठीक है… उसके बाद क्या-क्या बोला मैंने याद नहीं…

तुम्हें कुछ भी याद नहीं (मुस्कान ने हैरानी से पूछा)

नहीं, क्यों कुछ गलत कह दिया था क्या

नहीं नहीं, कुछ गलत नहीं कहा बस तुम अपने पुराने किस्से बता रहे थे….

हाँ फिर ठीक है... मैंने कहा था ना 4 पेग तक सब ठीक है... पाँचवाँ भारी पड़ता है... अरे हाँ याद आया... कैसा रहा तुम्हारा पहला पेग... मजा आया...

हम्म... मजे का तो पता नहीं, जूस जैसा ही था, पर याद हमेशा रहेगा मुझे पहला पेग... (मुस्कान ने गंभीरता से बोला)

हाँ पहला पेग, पहली राइड, पहली ड्राइव, तो सब याद ही रहता है... चलो... मैं किसी काम तो आया तुम्हारे...

हम्म... सही कहा... दोनों चाय पीने लगे...

मुस्कान समझ गई, कि उसे कुछ याद नहीं, और उसने भी कुछ नहीं पूछा ना कहा... हमेशा की तरह बस सब छुपाकर वो चुप थी और नॉर्मल बिहेव कर रही थी....

चलो जल्दी से सामान पैक कर लो फिर निकलना है.. थोड़ा और घूमते हैं और फिर शाम 4 बजे की बस है... आज मैं तुम्हें यहाँ के फेमस कढ़ी-चावल खिलाता हूँ

ठीक है, बस 10 मिनट दो मैं बैग लेकर रिसेप्शन पर मिलती हूँ

थोड़ी ही देर में दोनों रिसेप्शन पर मिले... चेक आउट करके... उन्होंने एक टैक्सी ली.. और कुछ बची हुई जगह जैसे, सुसाइड पॉइंट, लवर्स पॉइंट, मंगो पॉइंट, हिमालय रेंज देखने के लिए निकल पड़े।

वैसे तो तो कल ही मुस्कान को पता चला था कि रवि भी उसे बहुत चाहता है, पर मुस्कान ने नॉर्मल रहना का डिसाइड किया.. मुस्कान ने as usual बोलना शुरू कर दिया...

बताओ भला ये क्या पॉइंट बनाए हैं… पहले प्रपोज करो, फिर मना हो जाए तो सुसाइड कर लो… हद है लोगों से भी, रिजेक्ट हुए तो हुए, आगे बढ़ो.. कोई और मिल जाएगा

क्यों भैया

ड्राइवर हँसा और बोला… मैडम क्यों गरीब के पेट पर लात मार रही हैं, ये पॉइंट्स हैं, तभी तो हमारा काम-धंधा चल रहा है

हाँ भैया ये तो सही कहा आपने

इतने में रवि ने जोर-जोर से इशारा करते हुए मुस्कान को बोला, देखो मोर मोर

मुस्कान ने जल्दी से अपना कैमरा निकाला और फोटो ले ली

भैया ने गाड़ी धीरे कर दी थी..

ऐसे ही रवि बीच-बीच में कुछ दिखाता या किस्से बताता… बीच में अपनी स्पेशल जगह पर रवि ने मुस्कान को उसके फेवरेट कढ़ी-चावल भी खिला दिए

अब करीब 3 बजने वाले थे, टैक्सी वापस मॉल रोड वाले स्टैंड के पास पहुँचने वाली थी…

रवि ने पूछा, ब्रेड ऑमलेट खाना है

नहीं अब कुछ नहीं, कढ़ी-चावल खा के पेट मन सब भर गया… मुझे पसंद है कढ़ी-चावल।

हाँ मुझे पता है, तभी तो ले गया था… मुस्कान ने बड़े ध्यान से रवि को देखा.. और कल की सारी बातें फिर याद आ गई… उसे ऐसे देख रवि ने पूछा

क्या हुआ, सब ठीक…

हाँ सब ठीक…

फिर घूर क्यों रही हो, मुझे डर लग रहा है

तुम्हें और डर… वो भी मुझसे

हाँ भाई दिल्ली की लड़की का क्या भरोसा… पहाड़ पे ले जाकर फेंक दे…

वाह बेटा, लेकर तुम मुझे आए और फेंकूँगी मैं… रहने दो

इतने में दोनों टैक्सी से उतरे, भैया को पैसे दिए और स्टैंड की तरफ जाने लगे

बस को स्टैंड पर आने में 5-10 मिनट थे… वहीं सामने सब बतखों को दाना डाल रहे थे… मुस्कान और रवि भी चले गए… रवि ने दाना खरीद के मुस्कान को दिया… 5 मिनट तक वो दोनों बिना बोले बस दाना डाल रहे थे… इतने में किसी की आवाज आई… अरे दिल्ली की बस आ गई…

मुस्कान और रवि ने फटाफट सारा दाना डाला और बस की तरफ चलने लगे… रवि ने मुस्कान को बोला तुम बस में बैठो मैं रास्ते के लिए कुछ ले लेता हूँ….

थोड़ी देर में रवि आया और बस चलने लगी… पहले तो कुछ देर तक दोनों डीजी कैम में फोटो देख रहे थे… फिर थोड़ी देर में रवि सो गया… पर मुस्कान को अब भी नींद नहीं आ रही थी… जबकि पिछली रात भी वो नहीं सोई थी…

मुस्कान चुपके से रवि को देख रही थी और यही सोच रही थी… कि जो वो उसकी हर चीज का ध्यान रखता है, उसका मूड खराब होने पर उसे चेक करना… उसे हर बात बताता है… उसके खाने-पीने की पसंद और हर चीज का ध्यान रखा है, वही तो प्यार था… और मुस्कान को ये सब कभी समझ ही नहीं आया…

मुस्कान ने पहले दिन से लेकर और आज के कढ़ी-चावल और चिप्स के पैकेट तक सारी बातें दोहराकर सारा हिसाब लगा लिया…

पूरा रास्ता उसने बस इसी हिसाब में निकाल दिया…. पर वो एक पल के लिए भी नहीं सोई…

इतने में रात के 12 बजे बस दिल्ली पहुँच गई.... मुस्कान ने रवि को उठाया और फिर दोनों बस से उतर गए...

रवि ने एक टैक्सी की जो पहले मुस्कान को छोड़ेगी फिर उसको.... वो दोनों टैक्सी में बैठे और मुस्कान के घर की ओर जाने लगे...

इस समय मुस्कान से ज्यादा रवि का मन बेचैन था... क्योंकि वो मुस्कान को सगाई के लिए नहीं बल्कि अपने साथ एक ट्रिप पर लाया था और वो इस ट्रिप पर अपनी पूरी जिंदगी के सपने पूरे करना चाहता था...

जैसे-जैसे मुस्कान का घर पास आ रहा था... रवि का मन मानो जैसे बहुत उदास हो रहा था, उसे लग रहा था... कि बस घड़ी रुक जाए... और मुस्कान उसी के पास रहे... पर वक्त ही ऐसी एक चीज है जो कभी नहीं रुकती...

रवि चाह कर भी मुस्कान को आँख भर के देख नहीं पा रहा था ... और ना ही मुस्कान... पर आज मुस्कान से ज्यादा रवि बेचैन था, उसे लगा 4 दिन उसके साथ रहकर जैसे उसे उसकी आदत हो गई... अब वो उसके बिना रह नहीं पाएगा...

इतने में मुस्कान का घर आया... मुस्कान के पापा बाहर ही थे... उनका वेट कर रहे थे... रवि ने मुस्कान के पापा के पैर छुए और नमस्ते बोला

खुश रहो बेटा... कैसी रही सगाई, सब ठीक रहा ना...

हाँजी अंकल सब अच्छा था... सॉरी इतनी लेट के लिए

अरे ऐसी कोई बात नहीं... आओ मैं चाय बनाता हूँ..

नहीं अंकल टैक्सी का मीटर चालू है मैं इसी टैक्सी से घर जाऊँगा, फिर कभी आऊँगा

ऐसा कहकर रवि ने मुस्कान को बाय का इशारा करते हुए अपने मन को समझाया और बिना पलटे टैक्सी में बैठ गया

उधर मुस्कान की नजर टैक्सी से हट नहीं रही थी.... अंकल ने बैग उठाया और अंदर जाने लगे... पर मुस्कान तो जैसे चल ही नहीं पा रही थी, इतने में मुस्कान के पापा ने उसे आवाज लगाई...

बेटा कुछ और सामान भी है क्या... चलो आ जाओ बहुत रात और ठंड है

मुस्कान अंदर गई... वो कपड़े चेंज करके सोने चली गई |

दिल्ली के नए मिज़ाज

सिर्फ 3-4 घंटे की नींद लेकर रवि और मुस्कान दोनों ऑफिस पहुँचे… और हमेशा की तरह रवि 15 मिनट लेट था…

रवि ने आकर मुस्कान को स्माइल करते हुए गुड मॉर्निंग विश किया

गुड मॉर्निंग मुस्कान

गुड मॉर्निंग रवि, नींद हो गई पूरी?

कहाँ यार… बहुत थक गया मैं, आज आने का बिल्कुल मूड नहीं था, लेकिन आना ज़रूरी था तो आ गया हूँ

अच्छा, कोई नहीं मुझे बता देना, थोड़ा तुम्हारा काम मैं कर दूँगी

अरे क्यों, तुम भी तो थक गई होगी

ना जी, मैं बिल्कुल फ्रेश हूँ, जैसे मैं नैनीताल से नहीं किसी रिहैब सेंटर से आई हूँ

क्या बात है, गाँव मेरा, घर मेरा और रिहैब तुम्हारा हुआ… सही है

अच्छा जाओ अब काम करो, और मुझे भी करने दो, बहुत बैकलॉग है मेरे पास

ठीक है मैडम

.

.

दोनों अपने-अपने डेस्क पर काम करने लगे…

थोड़ी देर में भानु की आवाज़ आई, मैडम मिठाई

किस बात की मिठाई

रवि सर की सगाई हो गई है, उस खुशी में

अरे वाह, मैं दो लूँगी

बिल्कुल मैडम, ले लीजिए

इतने में रवि का इंटरकॉम बजने लगा… सब उसे बधाई दे रहे थे, कुछ लड़के तो उसकी सीट के पास आकर उससे सवाल करने लगे—क्या नाम है भाभी का, कहाँ की है, क्या करती है, कब है शादी…

रवि बहुत बिज़ी था सबको जवाब देने में

इतने में फिर उसका इंटरकॉम बजा

कांग्रेचुलेशन्स मिस्टर रवि… मैंने सुना है आपकी सगाई हो गई, मुबारक हो…

तुम भी ना, बाद में बात करते हैं

मुस्कान और रवि ऐसे बिहेव कर रहे थे जैसे कुछ हुआ ही नहीं… ना मुस्कान का दिल टूटा, ना रवि ने अपने दिल की बात बताई हो …

दोनों हमेशा की तरह नॉर्मल बिहेव कर रहे थे, वैसे ही नोक-झोंक और तकरार

पूरा दिन अपना बैकलॉग खत्म करके दोनों घर चले गए

आज दोनों बहुत चैन से सोए… गहरी नींद में

अगले दिन ऑफिस में बोर्ड मीटिंग थी, सब बहुत बिज़ी थे… पूरा दिन बस काम ही काम रहा, ना बात ना इंटरकॉम… बस काम

आज सब लेट भी होने वाले थे, इतने में रवि ने मुस्कान को इंटरकॉम किया और बोला…

आज तो लेट हो जाएगा, साथ चलेंगे, मैं तुम्हें छोड़ दूँगा

नहीं नहीं, मैं चली जाऊँगी, आज ऑटो ले लूँगी

अरे बहुत लेट हो जाएगा, मैं छोड़ दूँगा

अरे नहीं बाबा, तुम चिंता मत करो

अरे मैंने बोला ना (रवि ने थोड़ा ज़ोर से कहा)

मुस्कान को थोड़ा अजीब लगा, कि रवि ऐसे क्यों बोल रहा है

फिर रवि ने फोन काट दिया

कुछ रात के 8 बज गए, सब घर के लिए निकलने लगे… रवि मुस्कान की सीट पर पहुँचा, मुस्कान वहाँ नहीं थी….रवि ने उसे इधर-उधर देखा, वह नहीं थी

रवि उतर कर नीचे आ गया और बाइक स्टार्ट करके जाने लगा

थोड़ी आगे जाकर उसे मुस्कान स्टैंड पर दिखी, वह ऑटो वाले से बात कर रही थी

भैया आप जाओ, ऑटो नहीं चाहिए (रवि ने कहा)

मैंने बोला था छोड़ दूँगा, फिर इतना भाव क्यों खा रही हो

भाव नहीं खा रही, बहुत लेट हो गया, तुम मुझे छोड़ोगे फिर जाओगे तो तुम कब पहुँचोगे

बकवास मत करो और बैठ जाओ, पहली बार थोड़ी ही छोड़ रहा हूँ इतनी लेट

मुस्कान चुपचाप बाइक पर बैठ गई…

थोड़ी देर तक दोनों चुप थे, फिर रवि ने ही बात शुरू की

क्या हुआ तुम्हें, सब ठीक है ना? किसी ने इतनी छुट्टी के लिए कुछ बोला है क्या… तुम मुझे बिना बताए निकल गई… क्या हुआ

अरे ऐसा कुछ नहीं है, वो मैंने सोचा, अब तुम्हारी सगाई हो गई है, तो मैं क्यों तुम्हारी बाइक पर जाऊँ

हे भगवान, कितना फालतू सोचती हो तुम… और क्या-क्या बकवास सोच लिया तुमने

बकवास नहीं है ये सब, अगर प्रीति को पता चला तो

वाह, सिर्फ घर ही तो छोड़ रहा हूँ, इसमें वो क्यों बुरा मानेगी

मुस्कान चुप हो गई और मन में सोचने लगी (तुम्हारी बातें सुनकर तुमसे दूर होना ही ज़रूरी है, वरना ये प्रीति के साथ गलत होगा)

अब क्या सोच रही हो (रवि ने बाइक रोक दी)

और पीछे मुड़ गया…

इतना क्या सोच रही हो, दोस्त हूँ मैं तुम्हारा, घर तो छोड़ ही सकता हूँ, और इतनी परेशानी है तो आगे से नहीं छोड़ूँगा

अरे तुम नाराज़ क्यों हो रहे हो, मैं तो बस बता रही थी, कि अब हमें ऐसे नहीं घूमना चाहिए

उन दिनों ऐसे किसी की बाइक पर बैठना कोई नॉर्मल बात नहीं थी, और अगर कोई जानने वाला देख ले तो घरों में लड़ाई हो जाती थी… और सगाई होने के बाद तो बिल्कुल नहीं, फिर चाहे लड़के की हो या लड़की की…

बस इसी चिंता में मुस्कान रवि को अवॉइड करना चाहती थी, पर रवि अपनी शादी से पहले कोई मौका नहीं छोड़ना चाहता था मुस्कान के साथ रहने का, क्योंकि उसे पता था शादी के बाद मुस्कान उसके साथ ऐसे नहीं जाएगी, वो बहुत रूल्स वाली है

थोड़ी देर बाद रवि ने मुस्कान से पूछा, कुछ खाओगी, मुझे भूख लग रही है

खाने लगेंगे तो और लेट हो जाएगा

तो तुम आंटी को फोन करके बता दो

मुस्कान ने अपनी मम्मी को फोन किया और बोला कि लेट होगा और रवि उसे छोड़ने वाला है

फिर वो दोनों मुस्कान के घर के रास्ते में पड़ने वाले एक रेस्टोरेंट में चले गए

वहाँ रवि ने चाउमीन और चिली पोटैटो का ऑर्डर दिया

तुम इतना क्यों सोचती हो

किस बारे में? अरे यही कि सगाई हो गई, बाइक पर बैठना नहीं चाहिए, वगैरह वगैरह

अरे, कोई गलत थोड़ी ही सोचा मैंने

ऐसे मत सोचो, दोस्त हो तुम मेरी, और अभी शादी हुई नहीं है, जब होगी तो मत बैठना मेरी बाइक पर

अच्छा ठीक है, तुम छोड़ो ये बात, मुझे नहीं करनी ये बात

मैं देख रहा हूँ, जब से हम नैनीताल से आए हैं तुम थोड़ी अलग-अलग हो, इतनी बड़ी गलती कर दी क्या मैंने सगाई करके

हाहा तुम भी पागल हो (मुस्कान ने जानबूझकर हँसी से टॉपिक चेंज किया)… अच्छा ये बताओ, प्रीति से बात हुई

हाँ रोज होती है

अच्छा, ठीक है वो

हाँ ठीक है, उसे क्या होगा

अरे ऐसे ही पूछा

थोड़ी देर के लिए दोनों चुप हो गए, मुस्कान को समझ नहीं आ रहा था अब क्या बात करे, और वैसे भी जब से उसे रवि के दिल का हाल पता चला है, वो खुश होने की बजाय अब थोड़ा कटी-कटी रहती है

दोनों ने चाउमीन और चिली पोटैटो खत्म किए और रवि ने मुस्कान को उसके घर छोड़ा…

ऐसे ही कुछ महीने निकल गए… अब मुस्कान रवि की सीट पर कम जाती थी, और चाय की टपरी पर भी… मानो धीरे-धीरे उसने अपना रवि प्रीति को सौंपना शुरू कर दिया था…

उनकी अब फोन पर बात-चीत भी कम थी… बस अब रवि ही उसकी सीट पर आता था या उसे फोन करता था, मुस्कान ने ये सब बंद कर दिया था

बारिश

एक दिन बुधवार के दिन रवि व्हाइट शर्ट में था, वही व्हाइट शर्ट, जिसने मुस्कान को रवि का बना दिया था।

उस दिन रवि ने मुस्कान को इंटरकॉम किया और बोला… आज साथ चलेंगे, मुझे कुछ बताना है।

मुस्कान ने इस बार मना नहीं किया क्योंकि आज रवि ने वही व्हाइट शर्ट पहनी थी…

रवि ने बात शुरू की—

आजकल तुम बहुत बिज़ी रहती हो, मेरी सीट पर भी नहीं आती, मुझे कॉल भी नहीं करती… कहाँ बिज़ी हो, कोई मिल गया क्या?

मुझे कौन मिलेगा?

अरे क्यों नहीं मिलेगा, ढूंढना तो शुरू करो।

अच्छा, ढूंढ लूँ फिर मैं?

और क्या, ढूंढ लो…

वैसे एक रिश्ता आया है मेरे लिए…

ये बात सुनते ही जैसे रवि के अंदर आग लग गई… चाहे उसने कभी जताया नहीं, पर हकीकत में तो वो मुस्कान से प्यार करता है, वो भी बहुत ज़्यादा।

अच्छा… तुमने तो कहा था तुम लव मैरिज करोगी।

हाँ, करनी तो लव मैरिज ही है, लेकिन कोई रिश्ता आ गया तो क्या करना।

तो तुम मिली उससे?

हाँ, पिछले संडे घर आए थे वो लोग।

लास्ट संडे ही, और तुमने बताया नहीं (रवि का मुँह गुस्से से लाल हो गया)।

अरे मैं बताती, पर थोड़ा बिज़ी थी, और पिछले दो दिन से हमारी बात ही कहाँ हुई है…

रवि ने कोई जवाब नहीं दिया (वो अभी गुस्से में बाइक चला रहा था, वो भी तेज)।

मुस्कान समझ गई, शायद उसे इस बात से दुख हुआ होगा… आखिर उसे पता था रवि का हाल और वह बहुत अच्छी तरह जानती थी कि, जब हम किसी को प्यार करते हैं और पता चले कि वह किसी और का हो जाएगा, तो कैसा लगता है।

अरे मज़ाक कर रही हूँ, कोई नहीं आया देखने, और आता तो मैं तुम्हें बताती ना… और वैसे भी मुझे तो लव मैरिज करनी है… तुम बुद्धू के बुद्धू ही रहोगे… तुम्हारे टीचर मंगेतर ने कुछ नहीं सिखाया तुम्हें अभी तक।

रवि ने बाइक पर ब्रेक लगाए और मुस्कान को उतरने को कहा। मुस्कान उतरकर हैंडल के पास आकर खड़ी हो गई और रवि को देखने लगी।

क्या हुआ… मैं मज़ाक कर रही थी…

मेरी शादी की डेट निकल गई है, 27 नवंबर।

क्या… क्या?

मैंने कहा मेरी शादी की डेट निकल गई है, 27 नवंबर।

अरे वाह, मुबारक हो, अब तो बस 4 महीने बचे हैं…

हाँ, मुझे पता है, मैं तुम्हें बस ये बताना चाहता था कि डेट फिक्स हो गई है…

(रवि बहुत गुस्से में और बहुत उदासी में था, मानो वो अभी मुस्कान को गले लगा लेगा और बोल देगा कि चलो भाग चलते हैं, मुझे नहीं करनी शादी।)

मैं बहुत खुश हूँ तुम्हारे लिए रवि, कांग्रेचुलेशन्स वन्स अगेन…

रवि बस रोने ही वाला था, उसकी आँखों में पानी मुस्कान को साफ दिख रहा था, पर मुस्कान ये सब इग्नोर कर रही थी। वो नहीं चाहती थी कि रवि इससे आगे कुछ भी बोले… क्योंकि उसे पता था, अगला कहा हुआ एक भी शब्द सब बदल सकता है।

इतने में रवि ने हल्की आवाज़ में कहा—

मुझे तुम्हें कुछ और भी बताना है।

अरे शादी की डेट के आगे और कोई भी बात इतनी इम्पॉर्टेंट थोड़ी ही होगी, चलो कहीं चलते हैं और कुछ मीठा खाते हैं… (मुस्कान हर मुमकिन कोशिश कर रही थी, रवि को चुप कराने की)।

मुस्कान बाइक का हैंडल पकड़कर खड़ी थी, और रवि बाइक पर बैठा था। रवि ने मुस्कान का हाथ हैंडल के साथ पकड़ लिया…

मुस्कान के दिल ने बहुत ज़ोर से धड़कना शुरू किया, और रवि तो जैसे अपने होश में था ही नहीं… पता नहीं उसे आज क्या हुआ था, अभी तक तो उसने कभी कुछ कहा नहीं, फिर आज वो ऐसा क्यों कर रहा था… उसकी आँखें अब और भर गई थीं… जो कभी भी छलकने वाली थीं…

अचानक से बारिश शुरू हो गई, वो भी बहुत तेज… वो दोनों वहीं खड़े थे… भीग रहे थे… रवि ने अपने सारे आँसू बारिश में बहने दिए… जैसे मानो भगवान ने बारिश इसलिए की हो ताकि रवि के आँसू भी बह जाएँ और मुस्कान देखकर भी न देख पाए…

ये सब तकियानूसी बातें हैं कि लड़के रोते नहीं, या लड़के कमजोर नहीं पड़ते... वो भी इंसान हैं... उन्हें भी दुख और दर्द होता है, उन्हें भी रोना होता है... और जब से हमने ये कहानी शुरू की है, हमने सिर्फ मुस्कान का दर्द देखा और समझा, रवि का दर्द किसी ने महसूस नहीं किया... और हम अपनी असली ज़िंदगी में भी लड़कों का दर्द या दुख नहीं देखते...

मुस्कान ने रवि के हाथ से अपना हाथ छुड़ाया और बोली, चलो कहीं शेड में चलते हैं... वो दोनों पास के बस स्टैंड के पास बाइक खड़ी करके स्टैंड की छत के नीचे खड़े हो गए।

मुस्कान का बहुत मन था कि वो उसकी तरफ देखे, उसे चुप कराए... पर मुस्कान चुपचाप दूसरी तरफ देखती रही... कुछ ही देर में रवि ने कहा—

मुस्कान...

हाँ बोलो

वो मैं कह रहा था...

(वहाँ स्टैंड पर बहुत लोग थे, पर रवि को कोई फर्क नहीं पड़ रहा था, उसे लग रहा था बस वो दोनों ही हैं, और आज ही वो मौका है जब वो मुस्कान को सब बता देना चाहता था... उसे तो ये पता भी नहीं था कि मुस्कान सब जानती है और खुद उसने ही नैनीताल के कमरे की बालकनी में उसे सब बता दिया था...)

बारिश कितनी तेज है ना, अब तो लेट हो जाएगा...

रवि ने मुस्कान को अपनी तरफ मोड़ा...

मुस्कान ने जैसे ही रवि की तरफ देखा... वो एकदम सुन्न थी, उसकी फेवरेट व्हाइट शर्ट आज फिर से गीली थी... उसे एक पल में सब वो पुराना दिन याद आ गया... आज भी रवि दुनिया का सबसे खूबसूरत लड़का लग रहा था...

वो सिर्फ रवि को देखे जा रही थी, और रवि मुस्कान को… कुछ सेकंड में बारिश ऐसे बंद हुई, जैसे हुई ही नहीं थी…

दोनों बाइक पर बैठे और रवि ने मुस्कान को घर छोड़ दिया…

दोनों पूरे रास्ते चुप थे, जैसे उनकी सारी बातें बारिश में बह गई हों… जैसे अब सारे शब्द ऐसे गीले हो गए थे जैसे पेपर पर लिखी स्याही… मुस्कान ने सब कुछ नॉर्मल करने के लिए बीच-बीच में रवि से बात की—कि वो क्या पहनेगा शादी में… शॉपिंग कब करेगा… घर कब जाएगा… वगैरह वगैरह…

अगले दिन रवि ऑफिस नहीं आया, उसे भीगने की वजह से बुखार आ गया था… और सच कहूँ तो वो आज ऑफिस आना भी नहीं चाहता था… उसे लग रहा था उसने सब खराब कर दिया… हालांकि उसने कुछ कहा नहीं था, पर उसे लगा शायद मुस्कान सब समझ गई होगी, वो इतनी समझदार जो है…

अगले दिन जब रवि पहुँचा… मुस्कान ने उसे ज़ोर से गुड मॉर्निंग किया—

हेलो मिस्टर लेट लतीफ… बड़े नाज़ुक हो तुम, ज़रा सी बारिश क्या हुई तुम तो बीमार पड़ गए… ऐसे होते हैं क्या नैनीताल वाले?

गुड मॉर्निंग मुस्कान, बस क्या बोलूँ…

मुस्कान को नॉर्मल देखकर रवि को बहुत शांति पड़ी… उसे लगा चलो सब नॉर्मल है शायद।

अब मुस्कान ने वापस पहले जैसा व्यवहार करना शुरू किया, वो वैसे ही रवि की सीट पर जाती थी, उसे इंटरकॉम करके तंग करती थी, चाय की टपरी पर मैगी खाने जाती थी… ऐसे करते-करते अक्टूबर भी आ गया…

और रवि मानो वो बारिश वाली रात भूल गया हो।

अब रवि की शादी में बस कुछ दिन ही बचे थे… रवि ने ऑफिस में सबको इनवाइट किया… मुस्कान का इनविटेशन विथ फैमिली था।

ऑफिस में लोग डिसाइड कर रहे थे, कौन-कौन जाएगा शादी में… कुछ लोग तो बस नैनीताल घूमने के लिए हाँ कर रहे थे, और कुछ लोग बस रवि का दिल रखने के लिए… जबकि जाने वाले केवल कुछ ही लोग थे…

देखते-देखते ये दिन भी बीत गए… और रवि शादी के लिए घर चला गया…

मुस्कान उसे आनंद विहार छोड़ने गई थी… उसे पता था, अब जब वो रवि से मिलेगी तो उस पर मुस्कान का ज़रा भी हक नहीं होगा… वो बस एक आखिरी बार अपने रवि को जी भर के देखना चाहती थी…

रवि वेड्स प्रीति

आखिर वो दिन आ ही गया, जब रवि पूरी तरह से प्रीति का होने वाला था…

मुस्कान आज सुबह 10 बजे नैनीताल पहुँचने वाली थी। शादी की भागदौड़ के बीच भी रवि का सारा ध्यान घड़ी पर था… मानो आज घड़ी रुक गई हो और 10 बज ही नहीं रहे थे।

थोड़ी देर में रवि की मम्मी की आवाज़ आई-

अरे मुस्कान बेटा, अकेले आई हो, मम्मी-पापा कहाँ हैं?

नमस्ते आंटी, वो नहीं आ पाए…

कोई बात नहीं, आओ अंदर आओ

मुस्कान की नज़र जैसे ही रवि पर पड़ी, रवि उसे ही देख रहा था… रवि ने हाथ हिलाकर उसे वेलकम किया

मुस्कान ने भी स्माइल के साथ सर झुका दिया… घर में बहुत मेहमान थे, तो दोनों बात नहीं कर पाए…

रवि की बहन मुस्कान को अपने कमरे में ले गई और अपने कपड़े दिखाने लगी

रवि को मेहंदी और हल्दी लग चुकी थी, बस अब थोड़ी देर में तैयार होकर बारात निकलने वाली थी…

रवि घोड़ी चढ़ा, सब बहुत डांस कर रहे थे… मुस्कान कहीं दिखाई नहीं दे रही थी, रवि घोड़ी पर बैठा-बैठा उसे ढूंढ रहा था, पर मुस्कान उसे दिखी नहीं…

बारात प्रीति के घर पहुँची, और वरमाला हुई, रवि को अभी भी मुस्कान कहीं दिखाई नहीं दे रही थी…

रवि और प्रीति ने मैचिंग के कपड़े पहने थे, उन दिनों ये बहुत ट्रेंड था… और दोनों ही बहुत सुंदर लग रहे थे… सभी रिश्तेदार एक-एक करके फोटो खिंचवाने आ रहे थे…

इतने में सामने से रवि को मुस्कान आती दिखी… मुस्कान बहुत सुंदर लग रही थी, उसने साड़ी पहनी थी, बाल खुले थे और छोटी सी बिंदी और झुमकों ने उसके चेहरे की खूबसूरती बढ़ा रखी थी… रवि उसे बार-बार देखने की कोशिश कर रहा था…

मुस्कान पहले प्रीति के पास गई और उसे विश किया, फिर रवि के साइड में आकर खड़ी हो गई… उसने फोटोग्राफर से बोला—

भैया अच्छी सी फोटो खींचना, आपको टैग कर दूँगी…

.

.

इतने में दोनों ने फोटो के लिए पोज़ दिया…

फिर मुस्कान स्टेज से उतर कर चलने लग, रवि मुस्कान को जाते हुए देखे जा रहा था… मुस्कान ने एक बार भी पलटकर नहीं देखा… रवि का मन बहुत बेचैन था, उसे मुस्कान आज सबसे खूबसूरत लग रही थी, मानो प्रीति से भी ज्यादा और वो मुस्कान को थोड़ी देर और देखना चाहता था…

पर मुस्कान बस चलते-चलते वेन्यू से बाहर निकल गई… मुस्कान ने पहले ही दिल्ली के लिए एक टैक्सी हायर कर रखी थी… उसने रवि के घर जाकर अपना सारा सामान टैक्सी में रखा… और वहाँ जो बुआ-दादी और आंटियाँ थीं, उनसे बोला—

आंटी कुछ ज़रूरी काम है, आप रवि और उसकी मम्मी को बोल देना कि जाना पड़ा…

और वहाँ से दिल्ली के लिए निकल गई…

तुम कहती तो सही

अगले एक महीने रवि छुट्टी पर था... उसे हनीमून पर जाना था और कुछ गाँव की पूजा में शामिल होना था...

.

.

.

एक महीने बाद रवि दिल्ली वापस आया, वो प्रीति को साथ ले के आया था, शुरू के 3-4 दिन तो उसने प्रीति के साथ घर को एडजस्ट करने में निकाल दिए... इस दौरान रवि और मुस्कान की एक बार भी फोन पे बात नहीं हुई।

आज रविवार का दिन था और अगले दिन उसे वापस से ऑफिस जाना था। वो बहुत खुश था, हालांकि उसकी शादी हो गई थी और वो और प्रीति अब एक गृहस्थ जीवन जी रहे थे, फिर भी रवि का मन मुस्कान से मिलने का और उसे देखने का था। वो उससे बहुत बात करना चाहता था, उसे बताना चाहता था कि जब वो शादी के वेन्यू से बाहर गई तो कैसे रवि की ज़िंदगी की कुछ साँसें चली गईं...

रवि पूरी रात बेचैन था, और सुबह का इंतज़ार कर रहा था।

.

.

.

अगले दिन रवि टाइम से 5 मिनट पहले ऑफिस पहुँचा। वो मुस्कान को सरप्राइज़ करना चाहता था। जैसे ही घड़ी में 9 बजे, रवि ने गेट की तरफ देखना शुरू किया। बहुत लोग आ जा रहे थे, और काफी लोग रवि की सीट पे आके उसे बधाई दे रहे थे या हाल-चाल पूछ रहे थे…

सब कलीग्स ऐसे खड़े थे कि वो मुस्कान की सीट चाह कर भी नहीं देख पा रहा था।

जब सब चले गए, वो एकदम से उठा और मुस्कान की सीट पे गया…

“आप कौन?”

“मैं मेघा, आप रवि हैं ना जो शादी की छुट्टियों पे थे?”

“हाँजी… मुस्कान कहाँ है?”

(रवि ने बड़े आश्चर्य से पूछा)

“मुस्कान… उन्होंने तो जॉब छोड़ दी। मैं उन्हीं की जगह आई हूँ… आप थोड़ा सेटल हो जाओ, फिर आपके साथ और HOD सर के साथ मेरी ब्रीफिंग है, सर आपका ही वेट कर रहे थे।”

मेघा जो भी बोल रही थी, रवि को कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा था… उसे बस जानना था, मुस्कान कहाँ है, और बिना बताए जॉब कैसे छोड़ दी…

उसने मेघा को इग्नोर करते हुए मुस्कान को तुरंत फोन लगाया।

“जिस नंबर से आप संपर्क करना चाहते हैं, वो अमान्य रूप से बंद है…”

“जिस नंबर से आप संपर्क करना चाहते हैं, वो अमान्य रूप से बंद है…”

ये सुनते ही रवि को समझ नहीं आया वो क्या करे। उसने तुरंत मुस्कान के घर फोन किया।

ट्रिंग ट्रिंग…

ट्रिंग ट्रिंग…

ट्रिंग ट्रिंग…

बस बेल बजे जा रही थी…

रवि को कुछ समझ नहीं आ रहा था, उसका मन बैठा जा रहा था… वो जितना खुश था ऑफिस आने के लिए, अब उतना ही परेशान था…

उसने तुरंत फेसबुक लॉगिन किया और मुस्कान के पेज पे गया।

FB का पेज ओपन होते ही उसने एक नोटिफिकेशन देखा…

"शिफ्टेड टू मुंबई"

और उसके कवर पिक पे गेटवे ऑफ इंडिया की फोटो थी, जिसमें मुस्कान और उसकी फैमिली थी।

वो एकदम दंग रह गया…

मुस्कान ने बिना बताए जॉब भी छोड़ दी और वो मुंबई शिफ्ट हो गई…

.

.

.

उसने मुस्कान का FB थोड़ा स्क्रॉल किया। कुछ 3 पोस्ट के बाद उसे उसकी शादी की फोटो दिखी… जिसमें मुस्कान, रवि और प्रीति थे… और कैप्शन में लिखा था…

"**फिर मिलेंगे….**"

रवि थोड़ी देर तक मुस्कान की फोटो को देखता रहा और अचानक उसका ध्यान मुस्कान की साड़ी पे गया… उसकी साड़ी का रंग हरा था और एकदम से रवि को याद आया कि एक दिन मुस्कान ने कहा था—

''जिस दिन प्यार हुआ, तो ग्रीन साड़ी में उस लड़के के साथ फोटो फेसबुक पर अपलोड करूँगी, समझ जाना…''

रवि भारी मन के साथ हल्का सा हँसा और उसका एक आँसू टपक उसके गालों पे आके रुक गया… वो अब सब समझ गया…

उसके बीते हुए साल, जब से वो मुस्कान से मिला था, उसकी आँखों के सामने थे। वो रोना चाहता था पर रोया नहीं… पर अपने मन की भीगी हुई आँखों और उदास मन के साथ उसने उस फोटो के नीचे कमेंट किया –

"तुम कहती तो सही….."

सही और गलत

मुस्कान ने सब कुछ छोड़कर बिना कुछ कहे जाने का फैसला गलत लिया या सही, ये मैं नहीं जानती… पर मुस्कान को पता था कि अगर वो रवि के दिल का हाल जानकर रवि को बता भी देती, तो भी उनकी शादी नहीं होती… क्योंकि रवि के घर में दूसरी कास्ट की लड़की का आना उतना ही नामुमकिन था, जैसे सूरज का दक्षिण से निकलना…

अब आप सोच रहे होंगे, फिर मुस्कान ने उसकी शादी वाले दिन ही क्यों चुना ग्रीन साड़ी वाली फोटो अपलोड करके बताने का…

क्योंकि वो रवि को बहुत अच्छे से जानती थी… रवि अपनी फीलिंग्स और कई बातें छुपाता था… सिर्फ उससे नहीं, मम्मी-पापा से और कई बार बॉस से भी… वो मुस्कान की तरह ब्लंट नहीं था…

और मुस्कान उसे बस ये समझाना चाहती थी कि कुछ भी हो, हमारे मन में जो होता है वो बोल देना चाहिए, वरना बहुत देर हो जाती है… और इसलिए उस दिन मुस्कान ने रवि को बता दिया, ताकि वो आगे से कुछ भी दिल में ना रखे और उसका आने वाला जीवन प्रीति के साथ अच्छा बीते…

कभी-कभी कह देना बहुत ज़रूरी होता है… वरना पछतावे के सिवा कुछ नहीं होता…

मैं जानती हूँ इस कहानी की हैप्पी एंडिंग नहीं है… और शायद आप में से कुछ लोग मुझसे नाराज़ भी होंगे… पर यही ज़िंदगी है… हर कहानी का अंत अच्छा हो, ऐसा ज़रूरी नहीं… और हर लव स्टोरी पूरी हो, ये भी ज़रूरी नहीं…|

.

.

फिर भी अगर आपमें से किसी के भी मन में मेरे लिए कोई सवाल हो या कुछ जानना हो… रवि और मुस्कान या उनकी आगे की ज़िंदगी के बारे में… तो कभी आओ नैनीताल, नैना झील के किनारे बसे माल रोड पर—क्या पता वहाँ आकर आपको सारे सवालों के जवाब मिल जाएँ।

Love

मेघा विक्की सोंकला

Waiting to See You Again Sonkla Ji